चिंता से मुक्ति

अक्षर यात्रा

22वाँ अंक 2019-20

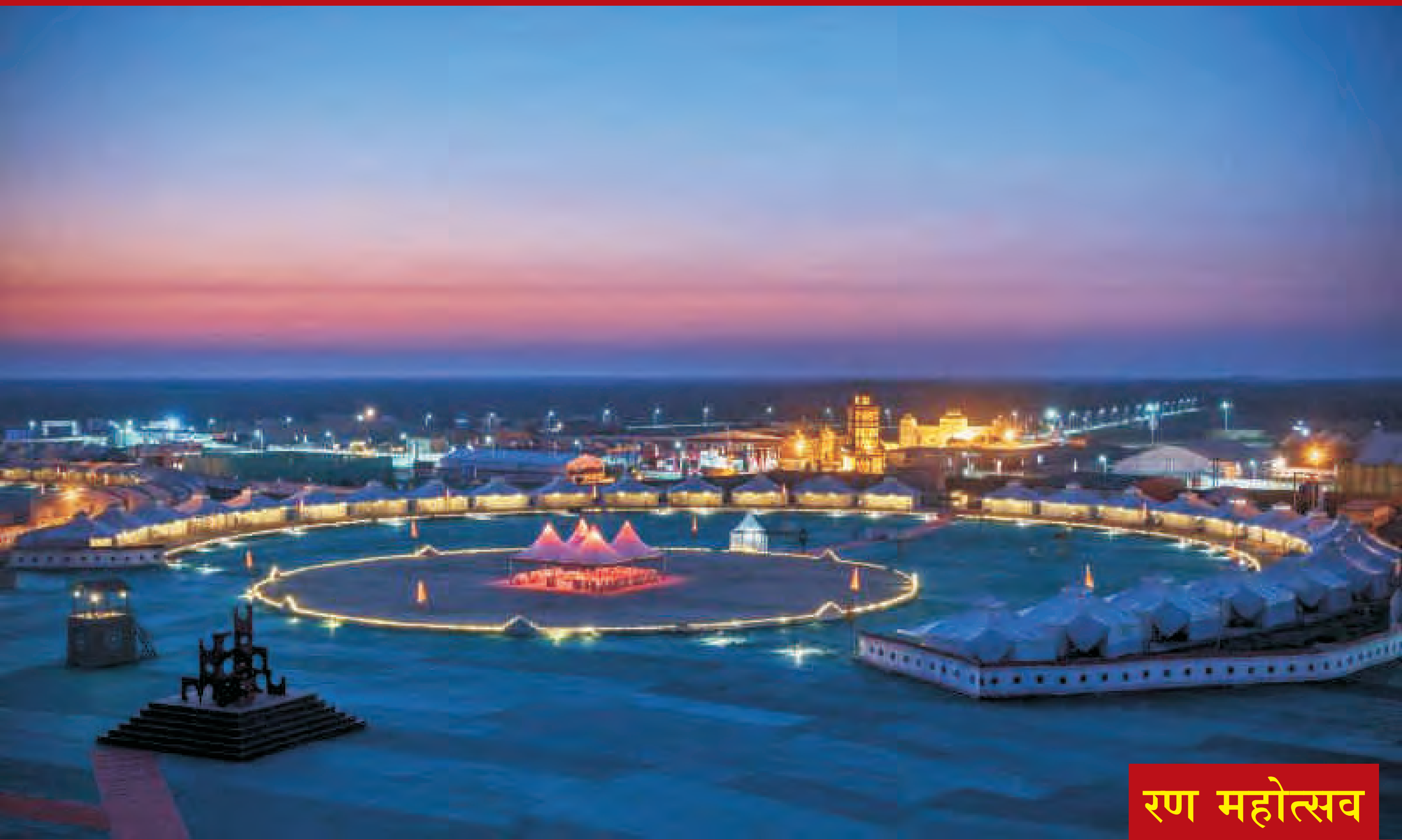

रण महोत्सव

क्षेत्रीय कार्यालय गुजरात

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

पंचदीप भवन, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद-380 014.

क्षेत्रीय कार्यालय में सदभावना दिवस का आयोजन

पैरा ओलंपिक टेबल टेनिस एलेक्जेंड्रिया-2
(30 जनवरी से 04 फरवरी 2020) में स्वर्ण पदक विजेता
श्रीमती भाविना पटेल, सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

चिंता से मुक्ति

अक्षर यात्रा

विभागीय हिंदी पत्रिका

वर्ष 2019-2020 अंक 22 केवल विभागीय परिचालन हेतु

संरक्षक
रत्नेश कुमार गौतम
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

मार्गदर्शक
अमरेश कुमार झा
सहायक निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

संपादक
कमल राम प्रजापत
वरिष्ठ अनुवादक

सह संपादक
भूपेन्द्र कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

टंकण सहयोग
एस. डी. महेता
निम्न श्रेणी लिपिक

प्रकाशक
क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, आश्रम मार्ग
अहमदाबाद-380014 (गुजरात)

दूरभाष : 079-27582400/ 450 (079-27540233 वी.ओ.आई.पी.सं. 20079034 राजभाषा शाखा)
फैक्स : 079-27540498 E-mail : rd_gujrat@esic.nic.in वैबसाईट : www.esic.nic.in

मुखपृष्ठ : रण महोत्सव
मुद्रक : कुमार मुद्रणालय, अहमदाबाद

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, इनसे संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

चिंता से मुक्ति

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक-रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
01	पत्रिका विवरण	-----	01
02	अनुक्रमणिका	-----	02
03	संरक्षक की कलम से	श्री रत्नेश कुमार गौतम	03
04	संपादक की कलम से	श्री अमरेश कुमार झा	04
05	संदेश	महानिदेशक	05
06	संदेश	वित्त आयुक्त	06
07	संदेश	बीमा आयुक्त (राजभाषा)	07
08	गांधीवादी सोच और सामाजिक सुरक्षा	श्री रत्नेश कुमार गौतम	08-09
09	लाइफ मैनेजमेंट	श्री कमल राम प्रजापत	10
10	राजभाषा हिंदी का प्रयोग	कुमारी उन्नति अग्रवाल	11-12
11	अहसास / जिद्द	श्री राज के. सिंह	13
12	बस यो हीं - राजभाषा पर निजी विचार	श्री गौतम कुमार	14
13	याज्ञसेनी	श्री भूपेन्द्र कुमार	15-17
14	मेरी राजस्थान की यात्रा	श्री श्रेणिक जैन	18-20
15	छायाचित्र	-----	21-24
16	वाणी विश्व समन्वय की/अब दुर्गा बनना होगा	डॉ. मालती दुबे/श्री प्रदीप गुणावत	25
17	मुस्कुराहट	श्री अर्जुन दैय्या	26
18	महिला सुरक्षा और डिजीटल इंडिया	कुमारी नितिका	27-28
19	मानव संसाधन का विकास	कुमारी उन्नति अग्रवाल	29-30
20	इतिहास-एक सक्षम गुरु और प्रेरक	श्री कमल कांत मीना	31
21	भारत में जल संकट / फिट इंडिया	श्री प्रमोद कुमार/श्री विशाल अग्रवाल	32
22	हम और हमारे बच्चे	श्री राजीव रंजन शर्मा	33-35
23	क्षेत्रीय कार्यालय की उपलब्धियाँ	समन्वय शाखा	36
24	हिंदी प्रगति रिपोर्ट	राजभाषा शाखा	37-38
25	क.रा.बी. निगम हितलाभ	दावा हितलाभ शाखा	39-40
26	हिंदी हैं हम / सफरनामा	श्री सौरभ वालिया	41
27	आपके पत्र	-----	42-44

रत्नेश कुमार गौतम
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

संरक्षक की कलम से

हमारा देश भारत भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं से ओत-प्रोत है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी'। भारतवर्ष के परिप्रेक्ष्य में यह कहावत आश्चर्यजनक रुप से सत्य है। भूगोल की दृष्टि से देखें तो कहीं अनंत नीलवर्ण समुद्र है तो कहीं हरियाली से लहलहाते मैदान हैं, कहीं कल-कल बहती नदियाँ हैं तो कहीं गगन को स्पर्श करते हुए पर्वत हैं, कहीं शून्य से भी कम तापमान पर जमी श्वेतवर्ण हिम है तो कहीं झुलसा देने वाली गर्मी को आत्मसात किये तप्त-शुष्क रेगिस्तान हैं। संस्कृति, धर्म और भाषा की दृष्टि से भी भारतवर्ष फूलों के गुलदस्ते के समान ही सुशोभित है, जिसमें नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों को एक साथ संजोया गया है। रंगबिरंगे फूलों की ये अद्‌भुत इन्द्रधनुषी छटा मनों को मोह लेने में सर्वथा सक्षम है। ऐसा लगता है जैसे अनंत रंगों और आभूषणों से भारतवर्ष का श्रृंगार मां प्रकृति ने स्वयं अपने हाथों से किया हो। इतनी विभिन्नताओं के पश्चात् भी राष्ट्र एवं राष्ट्रीय गौरव को सर्वोच्च स्थान देने की भावना हमें एक सूत्र में जोड़े रखती है। यही भावना हमें नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व का बोध करवाती है। भाषा के रुप में हमारे देश की राजभाषा हिंदी ने भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों को एक सूत्र में पिरोने का काम किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान निर्माताओं द्वारा विविध भाषारुपी मोती-माणिक्यों को हिंदी के रेशमी और मजबूत सूत्र में पिरोकर सम्पूर्ण देश को भाषाई आधार पर एकाकार करने की भावना सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है।

राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान एवं प्रचार-प्रसार भी हमारे संवैधानिक कर्तव्यों में से एक है। इसी कर्तव्य के निर्वहन में क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा गृह पत्रिका 'अक्षर यात्रा' के 22 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न भाषा-भाषी कार्मिकों ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देते हुए अपनी कृतियों द्वारा ज्ञान, बुद्धिबल एवं रचनात्मकता का प्रदर्शन किया है। अनवरत 22 वें अंक का प्रकाशन क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के समस्त कार्मिकों के राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम, सम्मान एवं समर्पण को प्रदर्शित करता है। 'अक्षर यात्रा' का 22 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है, आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपको पसंद आएगा। सुधिजन पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं, ताकि भविष्य के अंक को और अधिक परिष्कृत कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा सके, इन्हीं आशाओं के साथ सभी का अभिवादन।

संपादक की कलम से

ए. के. झा
राजभाषा अधिकारी
(प्रभारी)

केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार के लिए सभी अधिकारियों की ज़िम्मेदारी तय की गई है। जिसके संबंध में भारत के संविधान में राजभाषा उपबंध शामिल किये गये हैं। इसके अतिरिक्त गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम बनाकर एवं समय-समय पर अन्य निदेश जारी कर यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग राजकार्य में किया जाए। इसके लिए प्रोत्साहन एवं प्रेरणा की नीति को अंगीकार किया गया है। राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है और हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जो कार्मिकों को राजभाषा हिंदी से जोड़ने के लिए सेतु का कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त वर्ष पर्यंत कई प्रोत्साहन प्रतियोगिताएं जैसे मूल हिंदी टिप्पण आलेखन योजना व हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना आदि आयोजित की जाती हैं, जो सभी कार्मिकों के राजभाषा हिंदी के प्रति जुड़ाव को अनवरत बनाए रखती है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भी अलग अलग सदस्य कार्यालयों के सहयोग से प्रोत्साहन प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया जाता है। कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका का प्रकाशन प्रोत्साहन एवं प्रेरणा की अगली सीढ़ी कही जा सकती है। गृह पत्रिका में प्रकाशित लेख क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद में तैनात कार्मिकों के हिंदी प्रेम एवं रचनात्मकता के द्योतक हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा अपनी गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" का प्रकाशन लगभग दो दशक से सफलतापूर्वक किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना गृह पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य के सफल होने की दिशा में यह संगठित प्रयास है। इसी कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते हुए इस वर्ष "अक्षर यात्रा" के 22 वें अंक का प्रकाशन किया गया है, जिसे आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए बहुत ही हर्ष का अनुभव हो रहा है। विचारों के इस संकलन के सम्बन्ध में आपके उत्तम एवं मूल्यवान सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी, जिससे भविष्य में "अक्षर यात्रा" के अधिक परिष्कृत अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

राज कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAVAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEBSITE : www.esic.nic.in / www.esic.india.org

संख्या : ए-49/17/1/2016- रा.भा.
दिनांक : 29-12-2019

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद अपनी गृहपत्रिका "अक्षर यात्रा" के 22 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। मेरा मानना है कि कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने से हम संविधान के नियमों का पालन तो करते ही हैं, राष्ट्रीय कर्तव्य निर्वहन की दिशा में भी एक कदम और बढ़ाते हैं। पत्रिका इसके प्रचार-प्रसार का एक सशक्त स्त्रोत है। मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों तथा संपादक मंडल को अपनी ओर से बधाई देता हूँ।

(राज कुमार)

श्री जी. सी. दरजी
क्षेत्रीय निदेशक
क रा.बी. निगम
क्षेत्रीय कार्यालय
अहमदाबाद।

चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION

पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

PANCHDEEP BHAVAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002

WEBSITE : www.esic.nic.in / www.esic.india.org

संख्या : ए-49/17/1/2016- रा.भा.

दिनांक : 29-12-2019

संध्या शुक्ला (भा.ले.और ले.से.)
वित्त आयुक्त

संदेश

यह जानकर खुशी हुई कि क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद अपनी गृह पत्रिका 'अक्षर यात्रा' का अंक - 22 प्रकाशित कर रहा है। आशा है कि 'ख' क्षेत्र में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में अनुकरणीय सिद्ध होगा तथा निश्चित रुप से पत्रिका को प्रकाशित करने से पाठकगण ज्ञानवर्धक सूचनाओं से लाभान्वित होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाओं सहित,

संध्या

(संध्या शुक्ला)

श्री जी. सी. दरजी
क्षेत्रीय निदेशक
क रा.बी. निगम
क्षेत्रीय कार्यालय
अहमदाबाद।

एम. के. शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAVAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
WEBSITE : www.esic.nic.in   www.esic.india.org

चिंता से मुक्ति

संख्या : ए-49/17/1/2016- रा.भा.
दिनांक : 29-12-2019

संदेश

क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'अक्षर यात्रा' के 22 वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है, यह सुखद सूचना है। क.रा.बी. निगम बीमाकृत व्यक्तियों को उत्तम सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ अपने कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाने के लिए भी पूर्णतया प्रतिबद्ध है। पत्रिका प्रकाशन उस प्रतिबद्धता को दर्शाने का एक माध्यम होता है। पत्रिका के माध्यम से क्षेत्र के रचनाधर्मी कार्मिकों को अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का एक मंच मिलता है, जिससे भाषायी कौशल में भी वृद्धि होती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ,

(एम. के. शर्मा)

श्री जी. सी. दरजी
क्षेत्रीय निदेशक
क रा.बी. निगम
क्षेत्रीय कार्यालय
अहमदाबाद।

गांधीवादी सोच और सामाजिक सुरक्षा

रत्नेश कुमार गौतम
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

महात्मा गांधी की सोच, विचारधारा एवं दर्शन का भारत पर पहले भी बहुत प्रभाव था, आज भी है और भविष्य में भी सदैव रहेगा। भारत के सन्दर्भ में इसका राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण आदि में सर्वत्र है।

महात्मा गांधी की सोच के मूल में सत्य और अहिंसा है। गांधीवादी विचारधारा के अन्य तत्वों में संरक्षण (ट्रस्टीशिप), सत्याग्रह, स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय (सभी का उत्थान), स्वावलंबन (खादी को प्रोत्साहन), श्रम की प्रतिष्ठा आदि हैं।

संस्कृत का प्राचीन वाक्यांश है "सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:", जिसका अर्थ है कि सभी सुखी हों और निरोगी हों, सभी संपन्न रहें और कोई भी दुखी न हो। वर्तमान सरकार के मार्गदर्शक वाक्यांशों में से एक है "सब का साथ, सबका विकास"। इन दोनों दार्शनिक वाक्यांशों में निहित भाव है लोक कल्याण। सम्पूर्ण गांधीवादी सोच और सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा के मूल में केवल लोक कल्याण है।

सामाजिक सुरक्षा एक लोक कल्याणकारी अवधारणा है। सार्वभौमिक, प्रकृति में अनिवार्य, अंशदायी, परिभाषित हितलाभ, मजदूरी से संबंधित, मुद्रास्फीति से रक्षित, संरक्षक के रुप में सरकार और ऐसा ही बहुत कुछ सामाजिक सुरक्षा के आधार हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार सामाजिक सुरक्षा के अधीन प्रदान किये जाने वाले लाभ हैं, चिकित्सकीय देखरेख, बीमारी हितलाभ, वृद्धावस्था हितलाभ, बेरोजगारी हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, पारिवारिक हितलाभ, रोजगार चोट हितलाभ, अशक्तता हितलाभ एवं परिजन हितलाभ।

क्या सामाजिक सुरक्षा का विचार और गांधीवादी सोच का विस्तृत परिदृश्य कहीं मिलता है ? हाँ, इन दोनों विचारधाराओं के बीच समान आधार तलाशने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। मेरे विचार में सामाजिक सुरक्षा की विचारधारा के कुछ आधारिक लक्षण गांधीवादी सोच से मिलते हैं अथवा यह कहा जा सकता है कि गांधीवादी सोच में उपस्थित हैं। यह सत्य है कि गांधीजी ने कभी "सामाजिक सुरक्षा" शब्द का उच्चारण प्रत्यक्षत: नहीं किया। परन्तु भारत में सामाजिक सुरक्षा के कार्यान्वयन को उनके बहुत से विचारों ने प्रभावित किया है। निम्नलिखित बातें या तो सामाजिक सुरक्षा के सिद्धांतों को प्रभावित करती हैं अथवा उससे समानता रखती हैं :-

(1) संरक्षण (ट्रस्टीशिप) का सिद्धांत :- द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में भावी भारतीय संविधानिक व्यवस्था के व्यावसायिक पक्ष पर चर्चा के दौरान गांधीजी ने कहा कि कार्मिक, जो अधिकांशत: अस्पर्श्य थे, कथित उच्च वर्ण एवं राज्य की कृपा पर जीवित रहते थे और इनकी परिस्थितियों को समान करने के लिए विधायिका का प्रथम अधिनियम इन लोगों को जमीन प्रदान करना होना चाहिए, इसका मूल्य यूरोपियन सहित धनिक वर्ग से आना चाहिए।

यह उल्लेखनीय है कि क.रा.बी. अधिनियम, 1948 स्वतन्त्र भारत की केंद्रीय विधायिका द्वारा अधिनियमित किए गए आरंभिक कानूनों में से एक है। क.रा.बी. अधिनियम उसी प्रकार के विचार की परिकल्पना करता है, यद्यपि यह औद्योगिक एवं वाणिज्यिक कार्मिकों के लिए है, कृषि कार्मिकों के लिए नहीं।

(2) श्रम की प्रतिष्ठा :- गांधीजी ने सदैव श्रम की प्रतिष्ठा पर बल दिया। यह इतना अधिक था कि उन्होंने स्वयं ने शौचालय की सफाई के साथ साथ घर के सभी काम किए। इस विचार एवं पद्धति ने भारत के मजदूर वर्ग के जीवन में

बहुत परिवर्तन किया। हाथ से श्रम कर अपनी आजीविका कमाने वाले लोगों को उचित प्रतिष्ठा प्रदान की गई।

(3) स्वावलंबन :- महात्मा गांधी ने देश में ग्रामीण स्तर, समुदाय स्तर, शहर स्तर अथवा जिला स्तर आदि प्रत्येक स्तर पर स्वावलंबन को बल दिया। इस विचार ने स्थानीय शिल्पकार एवं दस्तकारों की आजीविका को सशक्त किया। भारत की आज की मुख्य "सामाजिक सुरक्षा" निधि भी कार्मिकों द्वारा अंशदान के माध्यम से स्वावलंबित है।

(4) स्वदेशी :- स्वदेशी हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के पीछे का आदर्श रहा है। गांधीजी ने स्वदेशी पर बल दिया ताकि हमारे छोटे उद्योग एवं स्थानीय मजदूर सशक्त हो सकें। स्वदेशी एवं स्वावलंबन के पीछे खादी को प्रोत्साहित किये जाने का विचार निहित था। वे स्वयं इसके लिए चरखा चलाते थे ताकि इसकी सहायता से बुने धागे से ही कपड़े बनाए जा सकें।

(5) आश्रम एवं ग्रामसंस्था का विचार :- टॉलस्टॉय आश्रम में, गांधीजी ने अपनी क्षमता / संसाधन के अनुसार कार्य करने और जरुरत के अनुसार आश्रम में रहने वालों द्वारा प्रतिफल / शेष ले जाने के विचार को प्रोत्साहित किया। यह क.रा.बी. निगम द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही चिकित्सकीय देखभाल हितलाभ के समान है। इस योजना में, अंशदाता अर्थात् बीमित व्यक्ति अपनी आय अथवा वेतन के अनुसार अंशदान करता है, परन्तु क.रा.बी. निगम द्वारा चिकित्सकीय देखरेख बीमित व्यक्ति एवं उसके परिवार के सदस्यों को उनकी जरुरत के अनुसार प्रदान की जाती है।

"वसुधैव कुटुम्बकं" एवं "सर्वे भवन्तुः सर्वे सन्तु निरामयाः" जैसी अवधारणा जिसका अभ्यास महात्मा गांधी द्वारा किया जाता था, आज की सामाजिक सुरक्षा के अत्यधिक समीप है।

लाइफ मैनेजमेंट

कमल राम प्रजापत
वरिष्ठ अनुवादक

कहा जाता है कि गुस्से में बिताया गया एक मिनट हमको 60 सेकंड की खुशियों से वंचित कर देता है। अब इसे दूसरे तरीके से देखें। गुस्से या किसी नकारात्मक भावना को त्यागकर बिताया गया एक मिनट हमारे 60 सेकंड़ों को आनंद से भर देता है। यदि आनंद न दे, तो भी यह हमारे समय को सहजता एवं शांति से तो भर ही देता है और यह एक कम आनंददायक स्थिति नहीं होती है। हम एक छोटी सी बात पर विचार करें। दुनिया में जिस एक व्यक्ति को हमारी बात माननी चाहिए वह व्यक्ति हम स्वयं हैं। हम सबसे पहले एवं सबसे सरलता से स्वयं को समझा सकते हैं। परन्तु यह समय सबसे कठिन समय होता है। हम बाकी दुनिया को समझाने में लगे रहते हैं। स्वयं को समझाने के बारे में तो ख्याल तक नहीं आता है। स्वयं की भावनाओं को समझने और अपने मन को समझाने की यह योग्यता ही आईक्यू कहलाती है। आईक्यू, अर्थात् दिमागी योग्यता पुरानी अवधारणा है। 21 वीं सदी आईक्यू, यानी भावनात्मक योग्यता की है। सबसे पहले यह अपनी भावनाओं का प्रबंधन है। यह सफलता से आगे की चीज है। अपने-अपने क्षेत्र में सफल तो बहुत से लोग होते हैं, परन्तु हम जिन लोगों का सम्मान करते हैं, उनके जैसा बनना चाहते हैं, वे आईक्यू से संपन्न होते हैं। ऐसे लोग बेहद तनावजन्य परिस्थितियों के बीच काम करते हैं। उन पर बहुत ही गुरुतर दायित्व होते हैं। बहुत सारे अवसरों पर उनका पूरा कैरियर और प्रतिष्ठा ही दाव पर लगी हुई होती है। इसके बावजूद भी वे आमतौर पर शांत और सहज दिखते हैं।

हम दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच देखते हैं, बड़े ही भावुक क्षण होते हैं, उत्तेजक क्षण होते हैं, परन्तु हमने सचिन तेंदुलकर को कभी भी भावातिरेक में नहीं देखा। हममें से एक व्यक्ति किसी एक राजनैतिक विचारधारा से प्रभावित हो सकता है और दूसरा किसी दूसरी विचारधारा से। यदि ऐसी स्थिति में थोड़ी भी परिपक्वता का अभाव है तो व्यक्तिगत टकराव तय है। परन्तु परिपक्व राजनेता ऐसा नहीं करते। अपवाद स्वरुप कुछ खिलाड़ी, नेता या नामचीन लोग भी अपना आपा खो देते हैं परन्तु वे आमतौर पर शिखर पर बैठे लोग नहीं होते हैं।

कई बार हम बस या ऑटो में यात्रा करते हैं। एक अनजान-सा ड्राइवर/कंडक्टर या सहयात्री थोडे से असहज तरीके से हमसे बात कर लेता है। हम उसी के बारे में सोच-सोचकर और अपने दिमाग के अंदर जवाब देते-देते सारा दिन व्यर्थ कर लेते हैं। विचारों की श्रृंखला चलती रहती है, उस व्यक्ति को तरह-तरह से अपमानित करने की, उसकी औकात बताने की कल्पना करते हैं। ठीक इसके विपरीत वह कंडक्टर या सहयात्री हमारी कल्पना से बेखबर अपना काम कर रहा होता है। हम पटाखों की लड़ी की तरह व्यवहार करते हैं। हमें मात्र माचिस दिखाए जाने का इंतजार होता है। कभी पति/पत्नी की कोई बात माचिस का काम करती है, कभी बच्चे की कोई हरकत और कभी बॉस या सहकर्मी की कोई टिप्पणी। जब हम फूटते हैं, चाहे आवाज करके या बेआवाज, तो दूसरे भी प्रभावित होते हैं, किन्तु सबसे ज्यादा असर हम पर ही पड़ता है। फूटने के उन तमाम क्षणों में हम पूर्णत: निरर्थक एवं व्यर्थ होते हैं। इस फूटने-फटने में हमारी ही खुशियाँ, उत्पादकता, शांति और समय नष्ट होते हैं। कई बार तो चिंगारी की जरुरत ही नहीं होती है।

ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिस्पर्धा की भावनाएं किसी की कामयाबी, खुशी, उपलब्धि या बेहतरी देखकर ही सुलग उठती हैं। हम मन ही मन उसे अपने से कमतर साबित करने या उसकी उपलब्धि को निरर्थक बताने में जुट जाते हैं। कई बार हमने देखा है कि सबसे खुश लोग वे ही होते हैं जिनको कोई फर्क नहीं पड़ता है। ये लोग अपनी भावनाओं के खिलाडी होते हैं। किसी अप्रिय बात पर तत्काल प्रतिक्रिया देने से बचते हैं। किसी भी बात की तह तक जाते हैं, उसे सामने वाले के नजरिए से भी समझने का प्रयास भी करते हैं।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग - समस्या एवं समाधान

कुमारी उन्नति अग्रवाल
सहायक

15 अगस्त, 1947 के पूर्व जब हमारा देश भारत स्वाधीन नहीं था, उस समय सरकारी कार्यालयों में कार्य करने हेतु अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता था। परन्तु जब देश स्वाधीन हुआ तो उस समय सरकारी कामकाज करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता उत्पन्न हुई, जो पूरे देश में अधिकांश लोगों द्वारा बोली व समझी जाती हो। उस समय संविधान के रचनाकारों ने जब इस पहलू के बारे में मंथन किया तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हिंदी भाषा सभी मापदंडों पर खरी उतरती है और जनमानस के अन्दर आसानी से समा सकती है। 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिंदी भाषा को संवैधानिक दर्जा दिया गया और संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को संघ की राजभाषा के रुप में मान्यता दी गई और इसके लिए देवनागरी लिपि को स्वीकार किया गया।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया व राजभाषा नियम 1976 बनाए गए। समस्त भारत देश को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भाषायी आधार पर तीन क्षेत्रों क, ख एवं ग में वर्गीकृत किया गया और प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित किए गए। परन्तु इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी राजभाषा संबंधी इन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सका जिसके पीछे मूलभूत समस्याएं एवं उनका यथोचित समाधान निम्नानुसार प्रस्तुत है :

1. राजभाषा संबंधी नियमों की जानकारी का अभाव :

यह देखा गया है कि अधिकतर कार्मिकों को नियमों की जानकारी नहीं होती, जिसके चलते उक्त कार्मिक जाने अनजाने में नियमों का उल्लघंन कर देते हैं।

समाधान : कार्मिकों को कतिपय मुख्य नियम जैसे कि धारा 3(3), नियम-5, नियम-12 इत्यादि से अवगत कराया जाए। नियमों के संबंध में अवगत करवाना राजभाषा शाखा का कर्तव्य है और नियमों की जानकारी के पश्चात् इन सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना सभी कार्मिकों का उत्तरदायित्व है।

2. अंग्रेजी में निरंतर कार्य करने की आदत :

सरकारी कार्यालयों में सभी कार्मिक ज्यादतर अंग्रेजी में काम करते हैं क्योंकि पीछे का काम देखकर आगे काम करने की आदत है। साइक्लोस्टाइल प्रपत्र अंग्रेजी में बने होते हैं, जिससे काम कम करना पड़ता है। हिंदी में कार्य करने के लिए नई शुरुआत करने की जरुरत है, अधिकतर कार्मिक इससे बचने के लिए अंग्रेजी में ही काम करने को प्राथमिकता देते हैं।

समाधान : प्रपत्र हिंदी में उपलब्ध करवाए जाएं। छोटी-छोटी टिप्पणियों, हस्ताक्षर, सुवाक्य, वार्तालाप इत्यादि से शुरुआत कर धीरे-धीरे हिंदी में कार्य करने को आदत बनाया जा सकता है।

3. कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की कठिनाई :

वर्तमान समय में कार्यालय का अधिकांश कार्य कंप्यूटर पर होता है। राजभाषा हिंदी में कार्य करते समय इसमें कई समस्याएं आती हैं, जिसमें फोन्ट की समस्या, टाइपिंग की समस्या, डाटा ट्रांसफर में उपयुक्तता की समस्या आदि प्रमुख है।

समाधान : राजभाषा शाखा द्वारा प्रत्येक कंप्यूटर में हिंदी के सरल फॉन्टस जैसे माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट व उपयुक्त सॉफ्टवेर डलवाए जाएं ताकि कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में सरलता से किया जा सके।

4. स्वयं हिंदी में कार्य ना कर राजभाषा शाखा पर निर्भरता :

केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए सहायता प्रदान करने हेतु राजभाषा शाखा का सृजन किया गया है। परन्तु अक्सर यह देखने में आता है कि कार्मिक अंग्रेजी में कार्य करके उसका अनुवाद करवाने हेतु राजभाषा शाखा को प्रेषित कर देते हैं।

समाधान : अनुवाद करवाने की अपेक्षा स्वयं राजभाषा हिंदी में कार्य करने की भावना को जागृत करना चाहिए। राजभाषा शाखा से काम में आने वाली कठिनाईयों के विषय में ही सहायता लेनी चाहिए। 'हिंदी का काम' की मानसिकता छोड़कर 'हिंदी में काम' की मानसिकता को अपनाना होगा।

5. हिंदी के प्रति हीन भावना की मानसिकता :

हिंदी आज भारत एवं विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, जोकि 60 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली, लिखी व पढ़ी जाती है, परन्तु इस बात पर गौरवान्वित महसूस करने के बजाय हीन समझा जाता है।

समाधान : ऐसा माना जाता है कि जिसे अंग्रेजी भाषा का ज्ञान है वही सभ्य है। अंग्रेजी के प्रति श्रेष्ठता की इस मानसिकता को दूर करने की आवश्यकता है।

6. प्रशिक्षण का अभाव :

कई बार यह भी देखा गया है कि कुछ कार्मिक राजभाषा हिंदी में कार्य करना तो चाहते हैं पर उन्हें कार्य करने में कुछ समस्याएं आती हैं, जैसे भाषा की दुरुहता और उपयुक्त प्रशिक्षण की कमी।

समाधान : भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ प्रशिक्षण दिए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कार्यालय की अपनी एक कार्यप्रणाली होती है, इसके लिए अपने विभाग विशेष के कार्यों का निष्पादन राजभाषा हिंदी में किये जाने के लिए कार्यालयी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जिससे कि संकोच, हिचक और डर से कोई राजभाषा हिंदी में कार्य करना न छोड़े। प्रशिक्षण में तकनीकी शब्दों का लिप्यांतरण सरल हिंदी में करके प्रयोग में लाना सिखाया जाना चाहिए।

7. प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की नीति व दंड के अभाव में नियमों की उपेक्षा एवं अवहेलना :

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की नीति को अपनाया गया है, जिसमें दंड की व्यवस्था नहीं है। यद्यपि जान बूझकर नियमों की उपेक्षा व अवहेलना करने पर कार्यालय प्रमुख के पास दंड के अधिकार सुरक्षित हैं।

समाधान : कार्मिकों को राजभाषा नियमों के अनुपालन की आवश्यकता एवं उनका उत्तरदायित्व समझाया जाए। चूंकि राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी सीधे-सीधे कार्यालय प्रमुख पर है, अत: अपने कार्यालय व कार्यालय प्रमुख की प्रतिष्ठा बनाए रखना भी कार्मिकों का कर्तव्य है, इसके संबंध में कार्मिकों को अपने उत्तरदायित्व को सदैव स्मरण रखना चाहिए।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं के अनुसार, राजभाषा हिंदी जोकि एक बहुत संपन्न, समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है, इसे छोटे छोटे प्रयासों से यदि उपयोग में लाया जाए, तो दूसरे देशों की तरह हम भी विश्व पटल पर अपनी राजभाषा हिंदी को एक नई ऊंचाई और पहचान दे सकते हैं। इसकी शुरुआत कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग से करनी होगी। चूँकि इतिहास साक्षी है कि बड़े बदलाव और क्रांतियों की शुरुआत छोटी छोटी कोशिशों से ही होती है। यही कोशिशें राजभाषा हिंदी को उचित स्थान और सम्मान दिलवाने में मील का पत्थर सिद्ध होंगी।

राज के. सिंह
उप निदेशक

अहसास

भूल नहीं पाता हूं मैं,
तेरा मेरे बगल में पहली बार बैठना,
हुआ था अज़ीब-सा अहसास,
इसलिए है वो दिन मेरे लिए ख़ास।

यूं तो आमने सामने,
न जाने कितनी बार बैठे थे हम,
कभी प्यार से तो कभी
तकरार से बातें किया करते थे हम।

पर उस दिन, जब तुम बैठे थे मेरे बगल में,
न मेरी नज़र तुम्हें देखी थी
और न ही तुम्हारी नज़र मुझे,
धड़कन भी काफी तेज थी,
जुबाँ पर था ताला लगा।

न तुमने कुछ बोला था,
और न ही मैंने था बोला,
कभी आंसमा तो कभी धरा की ओर देखकर,
बस यूं ही वक्त, हमने गुजारा।

यह, प्यार था या अपनापन मालूम नहीं,
पर जो भी था, मेरे लिए बहुत ख़ास था,
भूल नहीं पाता हूँ मैं,
तेरा मेरी बगल में पहली बार बैठना।

जिद्द

गुनाह सिर्फ इतनी हुई थी कि
रावण न बनकर भगवान राम बनना चाहता था मैं,
यह जानकर भी कि भगवान राम को
गुस्सा झेलना पड़ा था, धनुष तोड़ने पर।
जूठन खाना पड़ा था, भूख लगने पर।
अग्नि परीक्षा दिलवानी पड़ी थी, आरोप लगने पर।
वनवास भोगना पड़ा था, आज्ञा पालन करने पर।
सुधार ली है मैंने अब यह गलती,
राम नहीं मुझे अब रावण ही बनना है,
जल जाय लंका पर अपनी ही चलानी है।
हार होनी है यह जानकर भी, युद्ध ही मुझे लड़नी है।
भले लोग दें गालियाँ, जिद्द पर अपनी ही रहनी है।
जलेंगे हर साल मेरे पुतले, तो क्या हुआ
कम से कम इसी बहाने लोग मेरे लिए जमा तो होंगे।
क्या किसी ने भगवान राम के लिए
लोगों को इकट्ठा होते देखा है,
नहीं ना,
बस इसीलिए मुझे अब राम नहीं
रावण ही बनकर ताउम्र रहना है।

बस यो हीं

गौतम कुमार
उप निदेशक

क्या आप भी मानते हैं कि -
"इन्सान अपनी नजरों में सही होना चाहिए, दुनिया को छोड़ो, दुनिया तो भगवान से भी दुखी है।"

मनोविज्ञान कहता है कि अपनी नजरों में सभी सही होते हैं चाहे वे कितने ही गिरे हुए या नीच क्यों न हों। हर गलत काम करने वाला व्यक्ति उस गलती के पीछे कोई न कोई औचित्य बनाकर जरुर रख लेता है। आप उसे उसके गलत होने का एक कारण गिनाएंगे वह अपने सही होने का 10 बहाने बता देगा। जो व्यक्ति खुद की नजरों में गिर गया वह आत्मग्लानि से भरकर या तो बदल जाता है या बदलना अथवा गलती सुधरना संभव न हुआ तो जिंदा लाश बन जाता है। प्रगति करनी है तो खुद को बदलना होगा और यदि खुद को बदलना है तो क्या बदलना है इसकी पहचान करनी होगी और यदि क्या बदलना है उसकी पहचान करनी है तो खुद की कमियों और गलतियों का एहसास होना जरुरी है इसलिए अपनी नजर में खुद को सही समझना ही सही है यह सोचकर हवा में रहने की बजाए सही-गलत के प्रति अपना नज़रिया सही करने पर मेहनत करने का प्रयास करना चाहिए। यह बिल्कुल सही है कि अपना नजरिया सही करने के लिए लोगों की बजाए मानक धर्म ग्रंथों और मान्यताओं का सहारा लेना चाहिए क्योंकि दुनिया के लोग भी इंसान ही हैं और उतने ही दुविधा से भरे हैं जितने आप।

यदि आप खुद को निष्पाप, निष्कलंक, खुदा मानते हैं और आपको खुद में बदलने और बेहतर करने योग्य कुछ भी नहीं लगता तो अलग बात है अन्यथा अकेले में आईना देखने की आदत डाल लीजिए वरना चेहरे पर लगी कालिख समय रहते नहीं पोछि गई तो बाहर जगहँसाई होने से कोई नहीं रोक सकता।

किन्नर प्रवृत्ति

कभी किसी किन्नर को देखा है आपने ? उनकी क्या पहचान होती है ? उनकी भाव भंगिमाएं। वे ऐसी क्यों होती हैं ? दरअसल खुद को लड़की दिखाने के चक्कर में। पर कोई सामान्य लड़की क्या वैसे हाथ नचा-नचाकर या मुँह बिचका कर बात करती है ? नहीं न। दरअसल ऐसी किन्नर प्रवृत्ति बहुत आम है हर उस व्यक्ति में जो खुद को वह दिखाना चाहता है जो वह नहीं है। चाहे वह खुद को जिलाधिकारी की तरह पावरफुल दिखाने वाला जिलाधिकारी का चपरासी हो या फिर किसी धर्म का शून्य ज्ञान रखने वाला बाबा/दंगाई या फिर बड़े नेताओं का झोला ढोने वाला कोई छुटभैय्या नेता। इनकी भाव भंगिमाओं और पहनावे में आपको कुछ ऐसी बातें मिल ही जाएंगी जो कि खुद को कुछ और दिखाने के चक्कर में अपनाया गया और बनावटी लगता है। अपनी आंख और कान खुले रखें अन्यथा इनके चक्कर में आपका भी वही हाल होगा जो किन्नर को लड़की समझ कर ब्याह कर घर में लाने वाले का होता है।

राजभाषा के विषय में मेरे निजी विचार

आपको भी कभी कभी ऐसे लोग मिल जाते होंगे जिनकी मातृभाषा तो हिन्दी है, हिन्दी जानते भी हैं, परंतु हर किसी से जताते रहते हैं कि उनकी हिन्दी बड़ी कमज़ोर है। कारण है कि वे हिन्दी को गवाँरों की भाषा और उसके अल्प ज्ञान को अपना स्टेटस सिम्बल मानते हैं। अपनी मातृभाषा में अपनी कंगाली का ढोल पीटना कैसे किसी को प्रभावित करने का माध्यम हो सकता है, मेरी समझ से परे है। ये तो ऐसे हुआ मानो आप किसी को कह रहे हों कि मेरी माँ को मैंने भूखो मरने को छोड़ रखा है पर दूसरे देश की एक औरत है इसके तलवे चाटता हूँ और इसे अपना बड़प्पन मानते हों। नई नई भाषाओं का ज्ञान निश्चय ही सम्माननीय है परन्तु अपनी मातृभाषा की बेइज्जती कर के नहीं। ऐसे लोगों पर गुस्सा कर अपना खून न जलाएँ। उनसे प्रेम से पेश आएँ क्योंकि वे पढे लिखे जाहिल हैं।

याज्ञसेनी

भूपेन्द्र कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

समय के क्षितिज पर नजरें गढ़ाए वो अपने जीवन के अतीत को देख रही थी। चंचल-सा बचपन, फिर अठखेलियाँ करता किशोर जीवन और न जाने कितने सुहाने सपने संजोये हुए ये आँखे। ज्योति का स्कूल से कॉलेज तक का सफ़र बहुत ही संघर्षशील परन्तु सुनहरा था। पढ़ाई में अव्वल होने के साथ-साथ वो दिखने में भी किसी परी से कम नहीं लगती थी। अल्पावस्था में ही पिताजी के देहांत के बाद उसकी मां ने सिलाई का काम करके अपने तीनों बच्चों का पालन-पोषण किया था। ज्योति अपने छोटे भाई और बहन के लिए प्रेरणा का स्त्रोत थी, जिसने गरीबी के हालात में, दिये की रौशनी में पढ़कर और मांगी हुई किताबों को आधार बनाकर इतनी दूरी का सफ़र तय किया था। सभी को लगता था कि वो अपने जीवन में जरुर कुछ बड़ा मुकाम हासिल करेगी। स्वयं ज्योति भी चाहती थी कि वो अपनी माँ की इतने सालों की तपस्या पर खरा उतरकर उसे सहारा दे और गौरवान्वित महसूस करवाए।

खूबसूरत दिखने की मनोकामना हर कोई करता है परन्तु कहा जाता है कि सुन्दरता एक वरदान के साथ साथ एक अभिशाप भी है और ज्योति का जीवन इसी अभिशाप की भेंट चढ़ने वाला था। कॉलेज से आते-जाते न जाने कब एक युवक की नज़र उस पर पड़ी और वो ज्योति का पीछा करने लगा। ज्योति के कॉलेज से आने-जाने के समय वो युवक अपने मनचले दोस्तों के साथ रास्ते में खड़ा रहने लगा, जो आते-जाते सभी लड़कियों पर फब्तियां कसा करते थे। इन सब से अनभिज्ञ ज्योति को इसका पता तब चला जब एक दिन अचानक शराब के नशे में चूर उस युवक ने ज्योति का रास्ता रोका और बहुत ही भद्दे तरीके से ज्योति से प्यार हो जाने की बात कही। ज्योति इस असंभावित घटना से सन्न रह गई। उसे न कुछ कहते सूझा और न करते। ज्योति को उस युवक की बातों में प्रेम का कोई एक भी लक्षण नहीं दिखा परन्तु जोर-जबरजस्ती से पाने की जिद, और महिलाओं के प्रति उसकी गिरी हुई मानसिकता जरुर नजर आई। आते-जाते वह युवक यह भी धमकी दे गया कि उसे ना सुनना पसंद नहीं, वो अगर उसकी न हुई तो किसी दूसरे के लायक भी नहीं रहेगी। ज्योति का मन बुरी तरह घबरा गया। वो जैसे-तैसे कॉलेज से घर आई और अपने कमरे में जाकर लेट गई। मां को बताकर उसे भी परेशानी में डालना उसने सही नहीं समझा।

दिन-ब-दिन उस युवक द्वारा प्रताड़ना का क्रम जारी रहा। उसे अपने रुप से घृणा होने लगी, क्योंकि इसकी वजह से ही उसे इन परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा था। प्रेम शब्द का जो सुन्दर चेहरा उसके युवा मन में था, वो उसे अब बहुत ही वीभत्स और डरावना महसूस होने लगा। क्या इसी जोर-जबरदस्ती का नाम प्रेम है। एक दिन उसने हिम्मत करके उस युवक को फटकारने का पूरा मन बना लिया। अपने सम्पूर्ण आत्मविश्वास को समेट कर वो कॉलेज के लिए निकली। हमेशा की तरह वो युवक रास्ते में ही खड़ा कुटिलता से मुस्कुरा रहा था और उसके कुछ आवारा मित्र उसके आसपास खड़े आने जाने वाली लड़कियों को घूर रहे थे। युवक ने फिर ज्योति का रास्ता रोका और भद्दी सी हंसी के साथ उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की। शायद वह युवक ज्योति की चुप्पी को उसकी कमजोरी मान बैठा था और इसी के चलते उसने आज यह कदम उठाने की हिमाकत कर दी। ज्योति का चहेरा आवेश और गुस्से से तमतमा उठा और इसी आवेश में उसने अपना दायां हाथ उठाया और एक झन्नाटेदार थप्पड़ उस युवक के गाल पर जड़ दिया। थप्पड़ इतना जबरदस्त था कि युवक लड़खड़ाकर पीछे हट गया। ज्योति ने उसे भविष्य में ऐसी हरकत न दोहराने और इसका अंजाम भुगतने की चेतावनी दी और आगे बढ़ गई। वो युवक अपनी मित्रमंडली के सामने अपमान के कड़वे घूंट पीता हुआ ज्योति को तब तक देखता रहा, जब तक वो उसकी आँखों से ओझल न हो गई। उसकी विषबुझी आँखें क्रोध और अपमान की अग्नि में जल रही थी।

अगले दिन ज्योति फिर कॉलेज के लिए निकली। आज न तो वो युवक और न उसके मित्र ही उसे कहीं दिखाई

दिए। वो आश्वस्त होकर आगे बढ़ने लगी। उसे आज बहुत अच्छा लग रहा था। वो अपनी सोच में कहीं गुम थी कि अचानक एक मोटर साइकल तेजी से उसके पास से गुजरी, कुछ पानी जैसा उसके चेहरे पर गिरा। जो कुछ भी हुआ वो इतना जल्दी हुआ कि वो कुछ समझ ही नहीं पाई। बहुत भयंकर जलन और पीड़ा से वो तड़प उठी, उसे ऐसा लगा जैसे उसके चेहरे को आग में जलाया जा रहा है। दर्द की प्रबलता के चलते उसकी चीख तक गले में घुट कर रह गयी। उसके खूबसूरत चेहरे से चमड़ी और मांस गलकर टपकने लगे। असहनीय पीड़ा के कारण वो वहीं सड़क पर गिरकर अचेत हो गयी।

जब उसे होश आया तो उसे कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। वो अपने चेहरे को महसूस नहीं कर पा रही थी। एक आँख और पूरे चेहरे से लेकर गर्दन कर उसे पट्टियों से ढका गया था। एक आँख से उसने अच्छे से देखने की कोशिश की तो उसने पाया कि वह अस्पताल में बिस्तर पर लेटी हुई थी और उसकी मां उसके पास ही बैठी अपनी भीगी आँखों को पोंछ रही थी। देखकर लगता था जैसे वह बहुत रोई हो। उसने दिमाग पर जोर देकर याद किया कि वो यहाँ कैसे पहुंची तो कॉलेज के रास्ते में हुई घटना उसके मन-मस्तिष्क के साामने जीवंत हो उठी। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि वह एसिड अटैक की शिकार हुई है। एसिड अटैक की शिकार महिलाओं की तस्वीर वो टीवी और समाचार पत्रों में बहुत बार देख चुकी थी। अपने साथ हुए हादसे और उसके परिणाम के बारे में सोच कर उसकी आत्मा तक कांप उठी। उसने उठने की कोशिश की पर वहां मौजूद नर्स ने उसे उठने से रोक दिया। अपने हालात पर उसके आंसू तक न बह पाए। वो बिस्तर पर ही जड़ हो गई।

उसे घर आये आज एक महीने से ज्यादा हो गया था। आज उसकी पट्टियाँ हटाई जानी थी। घर पर आयी नर्स ने जब उसके चेहरे से पट्टियाँ हटाई तो वो मेज पर रखी ज्योति की तस्वीर को देख कर रो पड़ी। पट्टी हटने के बाद ज्योति ने शीशा देखने की जिद की। सब के मना करने के बावजूद वो उठकर शीशे के सामने खड़ी हो गयी। उसने अपने बुरी तरह जल चुके चेहरे को देखा, जहाँ कोई भी अंग अपनी जगह मौजूद नहीं थे। न कमनीय भौहें, न लम्बी पलकें, न उसका तीखा नाक, न उसके गुलाब की पंखुडियो जैसे होठ, न ही उसकी सुराहीदार गर्दन की वो नक्काशी। अपने खूबसूरत चेहरे की जगह जलकर लटक चुका मांस देखकर वो वहीं जमीन पर बैठ गई। उसकी खूबसूरती और आत्मविश्वास के पंखों को एक राक्षस ने एक झटके में कतर कर फेंक दिया, अब जो बचा था वो बस हाड़ मांस का एक पुतला मात्र था, जिसकी सारी आशाएं, उम्मीदें और संवेदनाएं मर चुकी थी।

समय धीरे-धीरे बीतता चला गया। ज्योति उसके बाद कभी कॉलेज नहीं गयी। सभी ने बहुत समझाया पर उसका अस्तित्व ही कहीं खो गया था। सारे सपने टूट चुके थे और हौंसलों का मजबूत स्तम्भ भरभराकर गिर गया था। अब उसे अपने जीवन में घने अंधकार के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आता था। नकारात्मकता उसके मन मस्तिष्क पर पूरी तरह हावी हो गयी थी। पर कहते हैं न जीवन में कब क्या चमत्कार हो जाये, ये ईश्वर ही जानता है। उसके कॉलेज में ही पढने वाला प्रतीक आज अपने माता-पिता के साथ उसके घर आया। वह भी पढ़ाई में काफी अच्छा था और अपने माता-पिता की ही तरह बहुत विशाल व खूबसूरत हृदय का स्वामी था। ज्योति को उसने कभी नहीं बताया था कि वह उससे बहुत प्रभावित है, उसे पसंद करता है और उसे अपनी जीवन संगिनी बनाने का सोच मन में रखता है। ज्योति की मां से मिलने के पश्चात प्रतीक के माता-पिता ने प्रतीक के लिए ज्योति का रिश्ता माँगा। ज्योति की माँ ने दुखद शब्दों में उन्हें अपनी बेटी के साथ हुए हादसे और उसके परिणाम के बारे में बताया। "मेरी बच्ची अब पहले जैसी खूबसूरत नहीं रही", ये कहते हुए वो रो पड़ी। प्रतीक ने उन्हें संभाला और उनसे पूछा कि क्या वो एक बार ज्योति से मिल सकता है। अनुमति लेकर वो ज्योति के कमरे के दरवाजे तक पहुंचा और दस्तक दी। ज्योति अचानक उसे वहां देखकर अपना चहेरा छुपाने की कोशिश करने लगी। प्रतीक ने उसे यह करने से मना किया और कहा कि कुछ भी छुपाने की जरुरत नहीं है। ज्योति फिर भी उसकी तरफ पीठ करके खड़ी रही। प्रतीक ने जब ज्योति को अपने प्रेम और उसके माता-पिता द्वारा शादी का प्रस्ताव रखने की बात कही तो ज्योति को लगा जैसे प्रतीक उससे कोई भद्दा मजाक कर रहा है।

ज्योति को प्रतीक पर बहुत क्रोध आया कि वह कैसे उसके हालातों की हंसी उड़ा सकता है। उसने सिसकते हुए प्रतीक को कहा कि क्या वह उसके बुरे हालात का मजाक उड़ाने आया है। प्रतीक ने यह सुनकर अपने मन की बात और अपनी निर्मल भावनाएं बहुत ही सभ्यता और आत्मीयता के साथ ज्योति के सामने रखी। प्रतीक की बातों की गहराई में ज्योति ने एक सात्विक प्रेम को महसूस किया। प्रतीक का निश्छल प्रेम और समर्पण देखकर ज्योति का मन भर आया। पर वो नहीं चाहती थी कि प्रतीक के प्रेम के बदले उसे ऐसी कुरुप पत्नी मिले जो कभी बहुत खूबसूरत थी पर अब उसके लायक नहीं। भारी मन से उसने प्रतीक को कहा कि उसे कोई अच्छी और सुन्दर दिखने वाली लड़की से शादी करनी चाहिए। प्रतीक ने बहुत ही सहज भाव से जवाब दिया कि वह ज्योति के रंग-रुप से प्रेम नहीं करता बल्कि उसके अन्दर मौजूद संघर्षशील और जीवन जीने की उमंग से भरी उस ज्योति से प्रेम करता है जो इस हादसे के बाद कहीं खो गयी है। उसका यह प्रेम शरीर और समाज के बन्धनों से बहुत ऊपर है, जिसमें समर्पण है, सम्मान है और प्रतिबद्धता है। ज्योति प्रतीक के ईश्वरीय प्रेम के समक्ष निरुत्तर सी हो गयी, बस भावातिरेक में उसकी आँख से आंसू बहते ही चले गये और उसके विदीर्ण हो चुके मन में एक अरसे के बाद मुस्कान तैरती चली गई।

दोनों की शादी हुई और प्रतीक ने उसे कभी ये एहसास नहीं होने दिया कि वो खूबसूरत नहीं है। हर रोज उसे प्रतीक के प्रेम में नयापन दिखाई देता, उसकी बातें ज्योति के मन को एहसास करवाने लगी कि वो अब भी बहुत सुन्दर है। धीरे-धीरे ज्योति भी प्रतीक के प्रेम में खोती चली गयी और उसके अंतर्मन के जल चुके वृक्ष में फिर से आत्मविश्वास के तंतु प्रस्फुटित होने लगे। प्रतीक के प्रेम और विश्वास की डोर के सहारे उसके मन का पखेरु फिर से उन्मुक्त गगन में विचरण करने को लालायित होने लगा। प्रतीक के प्यार और स्नेहने फिनिक्स पक्षी की भांति उसे अपनी ही राख से फिर जन्म लेने को प्रेरित किया। प्रतीक ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर फिर से पढाई शुरु करने की इच्छा जताई तो वो उसे मना नहीं कर पाई। ज्योति ने दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी पढाई फिर से शुरु की। एक आँख से पढ़ पाना मुश्किल लगता तो प्रतीक खुद उसे पढ़-पढ़ के सुनाया करता। प्रतीक के निश्छल और सच्चे प्रेम ने उसको होंसलों के वो पंख दिए, जिन पर सवार होकर वो फिर से ख़ुशी और सफलता के नील गगन में उड़ने लगी। जिन पंखों को किसी राक्षस ने क़तर कर उसे जमीन पर ला पटका था, उससे भी बेहतर पंख आज एक फ़रिश्ते के प्रेम और समर्पण ने उसे दिए हैं। ऐसा आत्मविश्वास और हौसला तो पहले भी नहीं था उसके पास। अपनी उड़ान की नई-नई मंजिलों को छूते हुए वो एक दिन भारत की सबसे बड़ी और सम्मानित प्रतियोगिता परीक्षा में बैठी और अपने हौसले के दम पर भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुई। प्रतीक के प्रेम ने कभी उसका हाथ नहीं छोड़ा और उड़ने के लिए सारा आसमान दे दिया।

आज उस बुरे समय को गुजरे 8 वर्ष हो चुके हैं। सोच में गुम ज्योति की आँखें आज आत्मविश्वास और ख़ुशी से लबरेज हैं। सामने उसका पति प्रतीक और उसकी 3 साल की बेटी मन्दाकिनी अटखेलियाँ कर रहे हैं। अपनी बेटी को देखकर उसे लगा जैसे वो खुद अपने बचपन में लौट आई हो। पति के रुप में अपने सामने मासूमियत से खिलखिलाते उस फ़रिश्ते को देखकर लगता है कि आज भी ऐसे इंसान हैं जो किसी को अँधेरे से निकाल कर उजाले तक पहुँचानेका सिर्फ हौसला ही नहीं देते, बल्कि हाथ पकड़ कर निकाल लाते हैं। जिस हौसले के पंखों पर वो आज आसमान की ऊँचाईयों पर उड़ रही है उनका एक-एक कतरा प्रतीक के प्रेम, समर्पण और विश्वास से बुना गया था। वह उसका विधाता था और वो याज्ञसेनी। जिसे हौसले के यज्ञ कुंड में निश्छल और शाश्वत प्रेम की आहुतियाँ देकर फिर से जीवन दिया गया था। आज उसका मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था। जो वो खो चुकी थी उसे वापस लौटाने के लिए और इतना खूबसूरत बनाकर लौटाने के लिए। ख़ुशी से उसका दिल भर आया, वहां से उठकर वो अपने फरिश्ते की तरफ बढ़ चली, जिसे देखकर उसकी आत्मा से एक ही आवाज आती थी "जीवन में हर बार हौसला दिखाना ही बड़ी बात नहीं होती, किसी का हौसला बनकर उसे फिर जीना सिखाना उससे भी बड़ी बात होती है"।

मेरी राजस्थान की यात्रा

श्रेणिक जैन
कार्यालय अधीक्षक

घूमने फिरने और नई-नई जगह देखने की चाह हर एक इंसान में होती है। हमारे पूर्वजों ने जब भी लम्बी यात्रा की, उस यात्रा का उद्देश्य ज्यादातर खाने और पानी की तालाश करना ही रहा। कभी अकाल और सूखे की वजह से तो कभी बाहरी आक्रमण ने उन्हें अलग-अलग जगह भटकने पर मजबूर किया। लम्बी यात्राएं कभी भी उनके लिए मनोरंजन का स्त्रोत नहीं रही। आधुनिक युग के आविष्कारों ने यात्रा जैसे दुष्कर कार्य को भी मनोरंजन में परिवर्तित कर दिया है। ट्रेन, बस एवं कार के आविष्कार ने दूरियों को छोटा बना दिया। हवाई जहाज के आविष्कार ने तो यात्रा और भ्रमण के क्षेत्र में क्रांति ही ला दी है और विश्व को एक छोटी परिधि में समेट दिया है। पहले जिन स्थानों को केवल दूरदर्शन पर देखा जा सकता था, आज उन स्थानों पर सुगमता से जाया जा सकता है, उनके विहंगम नज़ारे का आनंद उठाया जा सकता है।

बचपन से ही मैंने राजस्थान के बारे में बहुत सुना और पढ़ा था और दूरदर्शन पर इसके विभिन्न स्थानों, भौगोलिक अवस्थाओं और वहां की जलवायु के बारे में बताया जाता था। विशाल रेगिस्तान, ऊँटों पर सवारी करते लोग, पानी की कमी, सिर पर मटका लेकर जाती हुई महिलाएं, कोबरा सांप को अपनी बीन पर नचाते लोग और पारम्परिक पौशाक पहनकर नृत्य करती कालबेलिया स्त्रियां, कुछ ऐसी ही छवि बसी थी मन में राजस्थान की। पिछले वर्ष अपने परिवार के साथ राजस्थान के जयपुर शहर में घूमने का अवसर मिला, जहाँ मैंने अपनी कल्पनाओं के राजस्थान को सच में देखा। वही जयपुर जो विश्वभर में गुलाबी नगरी के नाम से विख्यात है।

हमारी यात्रा की शुरुआत दोपहर के समय जयपुर के सांगानेर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचने से हुई। पारम्परिक पेंटिंग्स से सजी हवाई अड्डे की दीवारें एहसास करवा रही थी कि हमारा राजपूताने (राजस्थान का पुराना नाम) में स्वागत है। वहां से हमने टोंक रोड़ पर स्थित एक होटल में चेक इन किया और भोजन करने के बाद थोड़ा आराम किया। शाम को सबसे पहले हम जयपुर के प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर पहुंचे। रंग-बिरंगे परिधानों और रत्नों से सुसज्जित भगवान लक्ष्मीनारायण की मूर्तियों को स्वयं में समाहित किये यह सफ़ेद संगमरमर से निर्मित अद्भुत मंदिर है, जो भारतीय वास्तुकारों की वास्तुकला की श्रेष्ठता को विश्व पटल पर प्रदर्शित कर रहा है। मंदिर के विशाल गर्भगृह के अतिरिक्त बहुत से लोग मंदिर परिसर के उद्यान में विचरण कर रहे थे। रोशनी से जगमगाता मंदिर, मंदिर के पीछे पहाड़ी और पहाड़ी पर बना रानी गायत्री देवी का महल; प्रकृति और मानव द्वारा किए निर्माण का अद्भुत संगम है। मंदिर के सामने पाव भाजी के बहुत से ठेले थे पर सबका नाम एक ही था 'पंडित पाव भाजी'। पाव भाजी का स्वाद भी अत्यंत ही लजीज था और इसी स्वाद के चलते शाम के खाने की पूर्ति हम सभी ने पाव भाजी से ही कर ली।

जयपुर में पहली रात की नींद पूरी करने के उपरान्त हमने अपने अगले भ्रमण स्थल का रुख किया। अकबर के नवरत्नों में से एक सवाई मानसिंह का महल 'आमेर का किला'। आमेर के किले का नाम माँ अम्बा के नाम पर आम्बेर रखा गया जो समय व्यतीत होने के साथ आमेर हो गया। बरसाती पानी की खूबसूरत झील

'मावटा' के समीप ऊँची पहाड़ी पर स्थित ये अभेद्य महल चित्ताकर्षक है। मजबूत पैरों के साथ ही इस किले तक पहुंचा जा सकता है, अन्यथा हाथी पर बैठकर जाना भी एक विकल्प है। प्रवेश द्वार पर लगी तोपें और विशाल प्रांगण इस किले के मुख्यद्वार को सुशोभित करते हैं। इसी प्रांगण के एक कोने में एक मंदिर का रास्ता भी जाता है, जहाँ देवी दुर्गा का एक प्राचीन मंदिर हैं और उनकी पूजा यहाँ 'शिलामाता' के नाम से होती है। आमेर के किले में भ्रमण करने के बाद इसके समीप और इससे भी उंची पहाड़ी पर स्थित जयगढ़ दुर्ग पर जाने के लिए एक विशाल सुरंग में प्रविष्ट हुए। यद्यपि इस सुरंग से जयगढ़ पहुँचने का काम शारीरिक रुप से काफ़ी दुष्कर था, पर यह एक रोमांचक अनुभव भी था। जयगढ़ एक रणनीतिक दुर्ग था और यहाँ सेनाओं के रहने और प्रशिक्षण का कार्य होता था। इसी दुर्ग में एशिया की सबसे बड़ी तोप 'जयबाण' तोप स्थापित है। कहा जाता है कि इस तोप को जांच के लिए केवल एक बार चलाया गया था और इसका गोला 35 किलोमीटर दूर स्थित गाँव 'चाकसू' के पास गिरा और उससे एक तालाब बन गया, जहां बरसात का पानी एकत्रित होता है और आज भी उसमें पानी भरा है और लोग उसका इस्तेमाल करते हैं। आमेर और जयगढ़ दोनों ही किले भारतीय सिनेमाकारों के लिए पसंदीदा स्थल हैं, जहाँ अनेक फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। इन दोनों किलों को देखने के पश्चात् हमारा शरीर थकान से चूर हो गया था। होटल में पहुँच कर कब खाना खाया, कब नींद आयी और कब सुबह हुई कुछ पता ही नहीं चला।

सुबह की शुरुआत विश्व प्रसिद्ध 'हवामहल' और उसके समीप स्थित खगोल विज्ञान की वैश्विक धरोहर 'जंतर मंतर' से हुई। हवामहल की खिडकियों में चलने वाली हवा के प्रवाह से मौसम और बारिश की भविष्यवाणी की जाती है, जो अधिकतर सटीक होती है और हमारे पूर्वजों के मौसम विज्ञान ज्ञान की श्रेष्ठता का बखान करती है। इसी तरह जंतर मंतर पर निर्मित आकृतियों से सूर्य, चन्द्र, ग्रह और अन्य राशियों के सटीक स्थान का पता लगाना आदि भी हमारे पूर्वजों के खगोल विज्ञान में सिद्धहस्त होने का पुख्ता प्रमाण है। नजदीक ही 'सिटी पैलेस' नाम का महल है, जिसका एक भाग पर्यटकों के लिए खुला रखा गया है। वस्तुत: यह जयपुर के राजघराने के सदस्यों का वर्तमान निवास स्थान है और जयपुर राजपरिवार के वंशज आज भी यहाँ रहते है। यहाँ पुराने राजा-रानियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले वस्त्र, श्रृंगार का सामान एवं हथियार आदि रखे गये हैं। यहाँ रखी पुरानी तस्वीरें जयपुर के इतिहास को दर्शाती है। इस महल की खूबसूरती के चलते कई फिल्मों की शूटिंग यहाँ हो चुकी है। 'सिटी पैलेस' घूमने के बाद हमारा अगला लक्ष्य रामनिवास बाग़ था। रामनिवास बाग़ में 'अलबर्ट हॉल' नामक संग्रहालय में पुरातन वस्तुओं, वाद्य यंत्रों, पुस्तकों, लेखों एवं हथियारों को सहेज कर रखा गया है। मिश्र से लायी गई एक महिला की 'ममी' इस संग्रहालय का विशेष आकर्षण है, जिसका नाम 'तुतु' है। अल्बर्ट हाल के ही दायें और बायें एक जन्तुघर और एक चिड़ियाघर स्थित हैं, जहाँ बहुत से वन्य प्राणी और रंग बिरंगे पक्षी रखे गये हैं। रामनिवास बाग़ स्वयं ही बहुत बड़े दायरे में फैला है और इसमें स्थित यह तीनों स्थान आपके मनोरंजन के लिए पर्याप्त हैं।

अगला दिन बिड़ला तारामंडल से शुरु हुआ जहाँ शानदार तकनीकी के प्रयोग से दर्शकों को अन्तरिक्ष में होने जैसा एहसास करवाया जाता है। अपने आसपास के ग्रहों, अनंत सीमा में फैली आकाशगंगा आदि को देखना अपने आप में एक रोमांचक अनुभव है। अलग-अलग प्रोग्राम के तहत मिश्र की सभ्यता और उनके खगोलीय ज्ञान को जीवंत रुप से दिखाया जाता है। ऐतिहासिक जयपुर में ऐसी तकनीकी से रुबरु होना बहुत

रोचक लगा। यात्रा के अगले पड़ाव में हम वास्तुकला के अद्‌भुत उदाहरण और 'एशिया के गौरव' की उपाधि से विख्यात 'राजमंदिर' सिनेमा हॉल में पहुंचे। सिनेमा हॉल तो पहले भी बहुत देखे हैं, पर खूबसूरती के मामले में इसे अद्‌भुत और अद्वितीय कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। कहते है कि यह वो सिनेमा है जहाँ लोग फिल्म देखने नहीं बल्कि इस सिनेमा हॉल की खूबसूरती को देखने आते हैं। राजमंदिर के सौन्दर्य दर्शन के पश्चात् शाम ढल चुकी थी। वहां से हम 'चौखी ढाणी' की तरफ चल निकले। 'चौखी ढाणी' को वस्तुत: राजस्थान के कला, संस्कृति, पहनावा, संस्कार और खानपान के संगम स्थल का प्रतिरुप माना जा सकता है। संध्या काल में बहुत सारे पर्यटक यहाँ आते हैं और यहाँ सीमित जगह में पूरे राजस्थान को देखने का आनंद लेते हैं। ऊंट की सवारी, बैलगाड़ी की सवारी, हाथी की सवारी, बहुत से मनोरंजक खेल, राजस्थानी नृत्य आदि यहां के प्रमुख आकर्षण है। राजस्थानी गाँव के घरों के प्रतिरुप बहुत ही मनमोहक हैं। अंत में राजस्थानी पगड़ी पहन कर स्वादिष्ट राजस्थानी खाने के आनंद को शब्दों की सीमा में ढालना संभव ही नहीं है।

जयपुर में यात्रा की समयावधि समाप्त होने पर वापसी का समय आ गया था। गेरुएं रंग में रंगे हुए इस खूबसूरत शहर में कुछ दिन बिताना एक सुखद एहसास था। बारिश के मौसम में हरी भरी पहाड़ियों से घिरे इस शहर का श्रृंगार स्वयं प्रकृति ने किया है। न केवल राजस्थान अपितु राजस्थान के लोग भी बहुत अच्छे लगे। इस सीमित लेख में पूरी जयपुर यात्रा और उसके छोटे-छोटे अनुभवों को कैद कर पाना संभव नहीं, लेकिन जयपुर की सड़कों पर घूमना, खूबसूरत जगहों को देखना, सरपट दौड़ती जयपुर मेट्रो ट्रेन, सवाई मानसिंह क्रिकेट स्टेडियम, कनक वृन्दावन, जल महल, गलता तीर्थ, गोविन्ददेव जी का मंदिर, मोतीडूंगरी का गणेश मंदिर, सिसौदिया रानी का बाग़, वर्ल्ड ट्रेड पार्क, सरस पार्लर, सोढानी स्वीट्स की मिठाईयों का आनंद लेना, रावत की कचौरी का स्वाद आदि ऐसे अनुभव हैं जो शायद ही कभी भुलाए जा सकें। जयपुर घूम कर एहसास हुआ कि राजस्थान को रॉयल राजस्थान क्यों कहा जाता है। राजस्थान निसंदेह बहुत तरक्की कर रहा है, पर अपने सांस्कृतिक और एतिहासिक मूल्यों को आज भी वह खुद में समेटे हुए है। पूरे राजस्थान को करीब से देखना अभी भी बाकी है, और राजस्थान को देखने की यह इच्छा मुझे अवश्य ही फिर वहां खींच ले जाएगी।

गृह पत्रिका 'अक्षर यात्रा' के 21वें अंक का विमोचन

हिंदी दिवस समारोह - 2019

चिंता से मुक्ति

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

नराकास राजभाषा प्रतियोगिता-विजेता पुरस्कार-2019

हिंदी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

बीमाकृत व्यक्ति के परिजनों को हितलाभ प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक श्री रत्नेश कुमार गौतम

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

डॉ. मालती दुबे
पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

वाणी विश्व समन्वय की

हिन्दी है हम सबकी उर्जा,
इसको गले लगाना है।
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम,
लिया सभी से शब्दों को।
जोड़ा सबको हिन्दी ने,
बाँधा सबको हिन्दी ने।
इसकी दृष्टि है वैज्ञानिक,
सृष्टि है इसकी वैचारिक।
इसको आगे बढ़ाना है,
सबको गले लगाना है।
सारे भाषा-भाषी मिलकर,
कहते है 'जन-गंगा' इसको।
भाषा 'जन-विराट' की हिंदी,
देती सबको अपनापन।
पाती है 'जन-जन' का प्रेम,
जन-जन को यह भाती है।
सबको गले लगाती है यह,
सबको प्यार सिखाती है।
वाणी विश्व समन्वय की,
'हाँ' वाणी विश्व समन्वय की।
हिन्दी है हम सबकी ऊर्जा,
इसको गले लगाना है,
हाँ इसको गले लगाना है।

प्रदीप गुणावत
वरिष्ठ अनुवादक
क.रा.बी.नि. जनरल अस्पताल,
नरोडा

अब दुर्गा बनना होगा

सीता-सी मर्यादा तोड़कर,
अब हमको उठना होगा।
सज्जनता दिखलाई बहुत,
बस अब दुर्गा बनना होगा।
क्यों इस अँधेरे कलयुग में,
हम अब तक सतयुग को तरसते हैं।
कौन बनेगा राम यहाँ ?
हर जगह रावण बसते हैं।
नारी का अस्तित्व यहाँ,
दीपक की तरह जलता है।
जग में फैलाती वो उजियारा,
उसके ही जीवन तले अँधेरा रहता है।
आई है दीवाली फिर से,
जीवन रोशन कर जाने को।
फिर से हर एक नारी को,
गृहलक्ष्मी का सम्मान दिलाने को।
अपने इस सम्मान की रक्षा,
खुद हमको करना होगा।
जीवित है अगर हम धरती पर,
तो प्रमाण भी देना होगा।

मुस्कुराहट

अर्जुन सी दैय्या
सहायक

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में इंसान अपनी 'मुस्कुराहट' खो चुका है। जब हम छोटे थे तो पूरा दिन ही हंसी मजाक में गुजर जाता था लेकिन फिर हम बड़े होने लगे। हमें उच्च शिक्षा की ओर जाना था, अच्छी नौकरी पानी थी, जिंदगी में अपने आप को सेट करना था। बस इन सभी बातों के चलते हम स्वयं को गंभीरता से लेने लगे और इसी भाग-दौड़ में हमने अपने चेहरे की मुस्कान कहीं न कहीं खो दी। अब तो लोग जितना हँसते हैं, उससे कहीं अधिक व्हाट्सअप और फेसबुक पर व्यस्त रहते हैं। जीवन में मुस्कुराते रहना बहुत जरुरी होता है। मुस्कुराहट में इतनी शक्ति होती है कि इससे दु:ख दर्द तो क्या बड़ी से बड़ी बीमारियाँ भी ठीक हो जाती हैं।

मुस्कान एक ऐसी दवा है तो मुफ्त है। यह हमारे स्वास्थ्य के साथ-साथ हमारे मन मस्तिष्क को भी शुकुन देती है। यह हमारी उम्र को बढाती है तथा तनाव से मुक्त करती है। इसलिए अपने हर काम को मुस्कुराते हुए करें। मुस्कान लोगों के साथ आपके संबंधों को बेहतर बनाती है। अत: इससे प्राप्त होने वाली ख़ुशी का सीधा असर हमारी सेहत व जिंदगी पर पड़ेगा।

मुस्कान से होने वाले कुछ गुणकारी लाभ इस प्रकार है:-

1. मुस्कान ह्रदय गति को घटाती है एवं शरीर को आराम प्रदान करती है:- दिल को स्वस्थ रखने के लिए तथा रक्तचाप को घटाने के लिए का व्यायाम एक विकल्प है परन्तु मुस्कान बिना पसीना बहाए इस काम को सरल बना देती है।

2. तनाव को कम करती है :- आज के आधुनिक युग में तनाव कई शारीरिक व मानसिक समस्याओं का कारण बन चुका है। मुस्कान से शरीर में इंडोफिर्न हार्मोन उत्पन्न होते हैं जिससे तनाव से छुटकारा पाने में मदद मिलती है।

3. मनोदशा को सुधारती है :- मुस्कान से उत्पन्न होने वाले इंडोफिर्न हार्मोन केवल तनाव को ही नहीं घटाते बल्कि हमारी मनोदशा को भी सुधारते हैं।

4. क्षमता को बढाती है :- यह वैज्ञानिक रुप से सिद्ध हो चुका है कि मुस्कान हमारी क्षमता को बढाती है। अत: इन्टरनेट पर देखे जाने वाले प्यारे प्यारे वीडियो व तस्वीर सच में लोगों को खुश कर सकते हैं।

5. विश्वास को बढाती है :- विश्वास हमारे सामाजिक जीवन का एक मुख्य घटक है। चेहरे की मुस्कान केवल लोगों को ख़ुशी ही नहीं देती बल्कि दो लोगों के बीच बनते विश्वास भरे रिश्ते को बढाने में मदद करती है।

6. सहानुभूति :- मनुष्य की भावनाएं उसे किसी के दु:ख व सुख को समझने में मदद करती हैं। अत: मुस्कान इन भावनाओं के सृजन में एक अहम भूमिका निभाती है।

7. ध्यान बढाती है :- मुस्कान या आनंद व्यक्ति के मन को काम में बांधे रखते हैं जिसके कारण उसका ध्यान केंद्रित रहता है तथा उसमें एक साथ कई सारे कार्यों को करने की क्षमता पैदा होती है।

8. संक्रामक :- 50 प्रतिशत व्यक्ति दूसरों के चेहरे की मुस्कान को देखकर मुस्कराते हैं। इसी कारण से मुस्कान एक संक्रामक चिकित्सा बन गई है जो हमारे आस पास के वातावरण को स्वस्थ बनाती है तथा उसे संतोष से भर देती है।

मुस्कान किसी भी व्यक्ति के ह्रदय की अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करती है। किसी के चेहरे पर मुस्कान को देखकर हम उसकी ख़ुशी का अनुमान लगा सकते हैं। ऐसा कहा जाता है कि चेहरा व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण होता है और यदि इसी चेहरे पर मुस्कुराहट हो तो यही मुस्कुराहट उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देती है। अत: सदैव मुस्कुराते रहें।

शी-बोक्स - महिला सुरक्षा और डिजिटल इंडिया

कुमारी नितिका
कार्यालय अधीक्षक

वर्तमान समय में महिला सुरक्षा पूरे देश का ज्वलंत मुद्दा है। महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध भारत जैसे लोकतंत्र के लिए निश्चित ही चिंता का विषय हैं। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा इन अपराधों के प्रभावी रोकथाम के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। 20 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में महत्वकांक्षी 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम को मंजूरी दी गई। सरकार के अनुसार यह कार्यक्रम भारत को डिजिटल सशक्त समाज में बदलने के लिए बनाया गया है। डिजिटल इंडिया महिला सुरक्षा के क्षेत्र में भी अहम योगदान दे सकता है। भारत में महिलाएं बड़ी संख्या में सरकारी क्षेत्र में सेवारत है और देश के विकास में अपना अतुलनीय योगदान दे रही हैं। कामकाजी महिलाओं के साथ किये जाने वाले अपराधों का प्रकार सामान्य अपराधों से अलग प्रकृति का है और इससे निपटने की रणनीति भी विशेष है। कार्यस्थल पर महिलाओं को एक सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाना सरकार की संवैधानिक व नैतिक जिम्मेदारी है।

इसी उत्तरदायित्व के निर्वहन में केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 24 जुलाई 2017 को कार्यस्थल पर होने वाले यौन शोषण से संबंधित शिकायतों को दर्ज़ करने के लिये यौन उत्पीड़न इलेक्ट्रॉनिक बॉक्स (Sexual Harassment electronic-Box - SHe-Box) नामक एक ऑनलाइन शिकायत तंत्र आरंभ किया गया है। जिसके प्रमुख बिंदु निम्न प्रकार है :

- यह शिकायत प्रबंधन व्यवस्था कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (निवारण, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013 (Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention, Prohibition and Redressal Act-2013) का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विकसित की गई है।
- यह पोर्टल केंद्र सरकार के किसी भी कार्यालय में काम करने वाली या वहाँ जाने वाली महिलाओं को उक्त अधिनियम के अंतर्गत कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न संबंधी शिकायतें दर्ज़ कराने के लिये एक मंच उपलब्ध कराएगा।
- उल्लेखनीय है कि जो महिलाएँ इस अधिनियम के अंतर्गत आंतरिक शिकायत समिति के समक्ष पहले से ही शिकायत दर्ज़ करा चुकी हैं, वे भी इस पोर्टल के माध्यम से पुन: अपनी शिकायत दर्ज़ करा सकती हैं।
- ध्यातव्य है कि अभी यह सुविधा केवल सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों हेतु ही उपलब्ध कराई गई है। यद्यपि जल्द ही इसे निजी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं हेतु भी उपलब्ध कराया जाएगा।

शी-बॉक्स का उद्देश्य :

- इस पोर्टल को आरंभ करने का एकमात्र उद्देश्य कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना कर रही महिलाओं को

त्वरित रुप से राहत पहुँचाना है। इस पोर्टल में शिकायत दर्ज़ होते ही, उसे सीधे संबंधित मंत्रालय / विभाग / पी.एस.यू. / स्वायत्त निकाय आदि की आई.सी.सी. के पास भेज दिया जाएगा, जिसे शिकायत की जाँच करने का अधिकार प्राप्त होगा।

- इस पोर्टल के माध्यम से महिला और बाल विकास मंत्रालय के साथ-साथ शिकायतकर्ता भी आई.सी.सी. द्वारा की जाने वाली जाँच पड़ताल की प्रगति पर नज़र रख सकेगा।

महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा महिलाओं के यौन उत्पीड़न से संबंधित अधिनियम का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिये कई उपाय किये गए है। मंत्रालय द्वारा महिलाओं के यौन उत्पीड़न से संबंधित अधिनियम पर एक लघु पुस्तिका का भी प्रकाशन किया गया है। इसके अतिरिक्त मंत्रालय द्वारा सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंधन संस्थान (आई.एस.टी.एम.) नई दिल्ली के सहयोग से इस कानून के संबंध में सरकारी अधिकारियों की क्षमता निर्माण करने और उनमें इस कानून को लागू करने की पेशेवर दक्षता विकसित करने के लिये एक प्रशिक्षण मॉड्यूल भी तैयार किया गया है।

महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करना किसी भी डिजिटल समाज की प्राथमिकता होना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए तथा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विज़न को साकार करने की दिशा में सरकार महिलाओं और पुरुषों में समानता तथा महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सूचना और प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने का काम कर रही है। यह कार्य स्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न से संबंधित शिकायतों के त्वरित निपटान के लिये डिजिटल स्पेस का उपयोग करने का एक सराहनीय प्रयास है।

मानव संसाधन का विकास - भारतीय परिप्रेक्ष्य में

कुमारी उन्नति अग्रवाल
सहायक

मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र अथवा संगठन की सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति होती है। किसी भी राष्ट्र की क्षमता एवं प्रभाविकता उसके मानव संसाधन के प्रभावी उपयोग पर अधिक निर्भर करती है। इस संसाधन की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए, यह बहुत जरुरी है कि इसके विकास के लिए पर्याप्त ध्यान दिया जाए। मानव संसाधन विकास के सभी पहलुओं का केंद्र बिन्दु, अत्यधिक बेहतर कार्यबल को विकसित करना है ताकि संगठन एवं व्यक्तिगत कर्मचारी अपने कार्य लक्ष्यों को सुनियोजित तरीके से निष्पादित कर सकें। मानव संसाधन की चर्चा करन से पूर्व यह समझना बहुत जरुरी है कि वास्तव में संसाधन क्या होता है और इसकी परिभाषा क्या कही जा सकती है। संसाधन एक ऐसा स्त्रोत है जिसका उपयोग मनुष्य अपने लाभ के लिये करता है। हो सकता है कोई वस्तु हमारे पास हमेशा से मौजूद रही हो, परन्तु वह संसाधन का रुप तब लेती है जब मनुष्य उसके फायदे को समझे और उसका उपयोग अपने विकास के लिए करना शुरु करे। जर्मनी के विख्यात अर्थशास्त्री एरिक जिम्मरमैन के अनुसार, "संसाधन होते नहीं, बनाए जाते हैं।"

मानव संसाधन वह अवधारणा है जो जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर दायित्व से अधिक परिसंपत्ति के रुप में देखती है। शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश के परिणामस्वरुप जनसंख्या मानव संसाधन के रुप मे बदल जाती है। मानव संसाधन उत्पादन में इस्तेमाल हो सकने वाली पूंजी है। यह प्रतिभाशाली और काम पर लगे हुए लोगों और संगठनात्मक सफलता के बीच की कड़ी को पहचानने का जरिया है। मानव को संसाधन बनाने की प्रक्रिया पर विशेष ध्यान देकर जो संगठन अथवा राष्ट्र इसमें निवेश करता है, वो निश्चित ही अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महाशक्ति बनने की राह पर अग्रसर हो जाता है। इसका जीवंत उदाहरण जापान देश है।

जापान छोटे छोटे द्वीपों से मिलकर बना एक छोटा सा देश है, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों जैसे खनिज, नदियां, धातु आदि की बहुत कमी है। जापान ही विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जिसने अपनी धरती पर दो-दो परमाणु बम विस्फोट का दंश झेला है। भौगोलिक रुप से भी जापान अति भूकंप प्रभावित क्षेत्र में आता है, जहाँ प्रतिदिन भूकंप आते ही रहते हैं। इन सभी विपरीत परिस्थितियों के उपरांत भी जापान ने अपनी जनसंख्या को मानव संसाधन में बदला। शिक्षा, तकनीकी विज्ञान औ चिकित्सा के क्षेत्र में निवेश कर अपने नागरिकों को संपदा के रुप में बदल दिया। अपने मानव संसाधन के बूते ही आज जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आज तकनीकी के क्षेत्र में जापान का लोहा पूरा विश्व मानता है। वर्ष 2011 में भयंकर भूकंप और सुनामी की त्रासदी झेलने के उपरान्त भी जापान ने अपने मानव संसाधन के बल

पर बहुत शीघ्रता से वापसी कर ली। जापान के नागरिकों ने सुनामी के समय ईमानदारी और देशभक्ति का अद्भुत उदाहरण विश्व के समक्ष रखा। सरकारी या निजी सम्पत्ति को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया गया और उन्होंने बहुत ही शांति और शालीनता से देश की आंतरिक एकता और सुरक्षा को पूर्ववत बनाए रखा।

भारत वर्ष को स्वाधीन हुए सात दशक से भी अधिक का समय व्यतीत हो चुका है। कई लोकतान्त्रिक सरकारें आयी और चली गई। भारत जनसंख्या के आधार पर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। कई पंचवर्षीय योजनाएं, योजना आयोग, नीति आयोग, केंद्र एवं राज्य सरकारों की अनगिनत योजनाओं के बावजूद भी भारत अपने नागरिकों को मानव संसाधन में परिवर्तित करने में आनुपातिक रुप से विफल रहा है। मानव संसाधन की अपार संभावना होने के उपरांत भी यहां के अधिकांश नागरिक गरीबी, बेकारी, अपराध, भ्रष्टाचार आदि में आकंठ डूबे प्रतीत होते हैं। भारत सरकार अन्य खर्चों में कमी कर अपने नागरिकों के सम्पूर्ण और समग्र विकास में निवेश कर सकती है। इसमें सस्ती व सुलभ प्राथमिक शिक्षा, द्वितीयक अथवा माध्यमिक शिक्षा और तृतीयक अथवा उच्च शिक्षा आदि में निवेश किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इनमें से द्वितीयक और तृतीयक शिक्षा का स्तर अतिमहत्वपूर्ण है, यह मानव मात्र को मानवशक्ति अथवा मानव संसाधन में परिवर्तित करने में सक्षम है। वैज्ञानिक, अभियंता, अध्यापक, डॉक्टर, तकनीशियन, नर्स, अनुसंधानकर्ता आदि की संख्या देश की जनसंख्या अनुपात में बढ़ाई जानी अत्यावश्यक है।

किसी भी देश में मानवशक्ति की गतिशीलता और उसकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण अपरिहार्य शर्ते है। शिक्षा दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है और रोजगार के बेहतर अवसरों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कुशलता पैदा करती है। वर्तमान समय में भारत में मानव संसाधन की प्रचुर उपलब्धता को पहचानने की विशेष जरुरत है ताकि भारत जैव तथा अजैव संसाधनों पर अपनी निर्भरता को त्याग कर आगे बढ़े और अपने विशाल मानव संसाधन के बूते पर विश्व अर्थव्यवस्था में नए आयाम और प्रतिमान स्थापित कर सके। विकसित देशों ने अपने नागरिकों को मानव संसाधन में परिवर्तित करने में बहुत अधिक सफलता प्राप्त कर ली है जबकि विकासशील एवं अविकसित देशों के लिए यह अभी भी एक दूर की क़ौडी जैसा कार्य है। भारत को भी अपने नागरिकों को मानव संसाधन रुपी पूंजी में परिवर्तित करना होगा, इससे न केवल भारत के नागरिकों को व्यक्तिगत लाभ होगा बल्कि उनका उपयोग कर राष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक लाभ का अर्जन किया जा सकता है। संसाधन की तलाश किये जाने के विपरीत यदि स्वयं को ही संसाधन में बदल दिया जाये तो गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी भारत में बीती खबर हो जाएगी और विकास के मार्ग पर अग्रसर भारत को वैश्विक स्तर पर आर्थिक महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक पायेगा। निश्चित ही भारत का सुखद भविष्य इसके मानव संसाधन में संचित है।

इतिहास :- एक सक्षम गुरु और प्रेरक

कमल कांत मीना
सहायक निदेशक

हममें से बहुत लोग यह सोचते हैं कि हम इतिहास की पढाई क्यों करते हैं। अन्य विषय जैसे गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिंदी आदि तो किसी न किसी तरह हमारे जीवन में उपयोगी होते हैं। परन्तु इतिहास पढ़ने के पीछे क्या उद्देश्य हो सकता है, आखिर हमारे जीवन में इसका क्या फायदा होता है।

आज और अभी से पहले जो समय गुजर गया वह इतिहास है और गुजरा हुआ समय वापस तो नहीं आता पर हमें अच्छा या बुरा सबक जरुर सिखाता है। हर व्यक्ति का जीवन अपने आप में एक प्रेरक कहानी जैसा होता है और हर कहानी में अच्छा और बुरा अनुभव होता है। इतिहास पढ़ने की असली वजह उन अनुभवों से सीखना है। कहते हैं कि समझदार इंसान वो है जो दूसरों की गलतियों से सीखे और विद्वानों द्वारा अपनाये गये अच्छे आचरण का अनुसरण करे।

ऐतिहासिक पात्रों का उल्लेख यदि किया जाए तो भारत में पैदा हुए दानवीरों का नाम अग्रणीय हैं। भारत के सुनहरी इतिहास में कई दानी हुए हैं। इनमें से एक थे दानवीर कर्ण, जिन्होंने महाभारत युद्ध से पहले देवताओं के राजा इंद्र द्वारा मांगे जाने पर अपने कवच और कुंडल दान कर दिए थे। किवदंती है कि यह कवच कुंडल साधारण नहीं थे, कोई भी दिव्यास्त्र उस कवच को भेद पाने में सक्षम नहीं थे और कर्ण द्वारा धारण किये गये कुंडल को दूर से ही प्रणाम कर लौट जाते थे। कर्ण के लिए महाभारत का युद्ध जीवन मरण का युद्ध था और कवच कुंडल उसकी सबसे बड़ी शक्ति थी। इतना ही नहीं, वे कवच और कुंडल कर्ण के जन्म के साथ ही उसके शरीर के अंग के रुप में पैदा हुए थे। उन्हें काटकर अपने शरीर से अलग करना कितना कष्टप्रद रहा होगा, इसकी मात्र कल्पना की जा सकती है। इन सब के बावजूद भी उन्होंने दान की गरिमा को बनाये रखा और बृहद हस्त से दान दिया।

इसी क्रम में यदि हम चर्चा करें तो भारत में एक से बढ़कर एक दानवीर हुए हैं, जिन्होंने अपने त्याग से इतिहास को भी अपना ऋणी बना दिया। आप और हममें से बहुत लोगों ने भामाशाह का नाम सुना होगा। वर्तमान में भामाशाह नाम को दानवीर शब्द का पर्याय समझा जाता है। भामाशाह बचपन से ही मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वसीय सलाहकार थे। भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में जैन धर्म में हुआ। हल्दीघाटी के युद्ध में पराजित होने के बाद मातृभूमि के लिए अकबर से जुझते हुए एक समय ऐसा आया कि अब महाराणा प्रताप अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए परिवार सहित पहाड़ियों में छिपते हुए घूम रहे थे। वित्त के अभाव में अपने संघर्ष को यथावत रख पाना महाराणा प्रताप के लिए उस समय संभव नहीं था। भामाशाह ने उस विपरीत समय में महाराणा प्रताप की मदद की और अपनी सारी पूंजी महाराणा प्रताप को सौंप दी ताकि पुन: सेना का संगठन किया जा सके और महाराणा प्रताप अपना संग्राम जारी रख सके। कहते हैं कि उन्होंने इतना धन दान किया था कि पच्चीस हज़ार सैनिकों का बारह वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। इस सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह जागृत हुआ और उन्होंने पुन: सैन्य संगठन कर मुग़ल शासकों को पराजित कर फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया। उदयपुर राजस्थान में राजाओं के समाधिस्थल के बीच महाविभूति भामाशाह की समाधि बनी हुई है। ऐसे दानवीर और देशभक्त इतिहास में कभी कभी ही पैदा होते हैं। देशहित में अपनी सुख सुविधा और धन का परित्याग कर पाना इतना आसान नहीं होता। यह भी सत्य है कि आसान कामों के लिए आपका नाम कभी इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से नहीं लिखा जाता।

जीवन में हो सकता है आपको भी हजारों सुख सुविधाएं मिलें, जिनकी लक्ष्मण रेखा इतनी मजबूत हो कि उसे लांघ कर बाहर आना नामुमकिन जैसा महसूस हो। परन्तु देश और समाज के हित में हमें अपने व्यक्तित्व को इतना मजबूत बनाना चाहिए कि देश और समाज की भलाई के लिए यदि इन सुख सुविधाओं का त्याग भी करना पड़े तो हम हँसते हँसते कर दें। इतिहास के पन्नों में अनगिनत नाम दर्ज हैं, परन्तु सबसे आगे और सबसे सम्माननीय नाम सदा उन लोगों के रहे हैं, जिन्होंने स्वयं के लिए जीने के बजाय, अपना सब कुछ दूसरों की भलाई के लिए अर्पण कर दिया। इतिहास हमें यही सिखाता है कि हमें ऐसे काम करने चाहिए जो हमारी भावी पीढ़ी के लिए आदर्श बन जाएं क्योंकि जीवन केवल व्यक्तिगत उत्थान का माध्यम ही नहीं बल्कि देश, समाज और प्राणीमात्र के हित में अपना सर्वस्व कुर्बान करने का नाम है।

चिंता से मुक्ति

भारत में जल संकट

प्रमोद कुमार
कनिष्ठ अभियंता
(विद्युत)

आज हम चाँद की ओर अग्रसर हो गए हैं, परन्तु जल समस्या इस ख़ुशी को कम कर देती है। भारत एक ऐसा देश है जिसका 70 प्रतिशत भाग जल से घिरा है परन्तु स्वच्छ पेयजल उपलब्ध न होना आज एक विकट समस्या है।

नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार कुछ आंकड़े निम्नलिखित है :-

(1) सन 2030 में भारत की 40% जनसंख्या पानी से वंचित होगी।
(2) सन 2020 तक देश के 21 शहरों में भूमिगत जल लगभग समाप्त हो जायेगा।
(3) भारत में जल की कमी से 70% जल प्रदूषित हो चुका है।
(4) वाटर इंडेक्स में प्रदूषित जल में हम 122 देशों में 120 वें स्थान पर हैं, जो कि विचारणीय है।

भारत में प्रदूषित जल से प्रत्येक वर्ष 2 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है तथा प्रत्येक दिन 547 लोगों की मृत्यु हो जाती है। हाल ही में 'पटना टाइम ऑफ़ इंडिया' के अनुसार 'पटना नगर निगम' ने 575 सबमर्सिबल पम्पों को मंजूरी दी, जिनसे पानी का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। यह आंकड़ा सरकारी है, निजी स्तर पर कितने सबमर्सिबल पम्प लग रहे हैं, इसका कोई आंकड़ा नहीं है।

अगर यही हाल रहा तो भारत में 'जीरो डे' घोषित हो जायेगा, मतलब सरकार के पास आपको देने के लिए पानी नहीं होगा; इसका उदाहरण दक्षिण आफ्रीका के केपटाउन शहर में देखा गया।

दुनिया की 16 प्रतिशत जनसंख्या भारत में है और दुनिया के साफ़ पानी का 4 प्रतिशत भारत में है। भारत में जल संकट इसलिए बढ़ रहा है, क्योंकि तीव्र नगरीकरण से तालाब और झीलों जैसे परम्परागत जल स्त्रोत सूख गये हैं।

अगर हम सभी लोग और सरकार अभी भी जल संकट के लिए जागरुक नहीं हुए तो भारत को इसके गंभीर परिणाम देखने को मिलेंगे, उदाहरण के लिए चेन्नई और बिहार में 'जल संकट'। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य बनता है कि वह जल का गलत दोहन न करे और अपने आस पास अधिक से अधिक वृक्ष लगाए।

फिट इंडिया मूवमेंट

विशाल अग्रवाल
कनिष्ठ अभियंता
(सिविल)

भारत के प्रधानमंत्री द्वारा 29 अगस्त 2019 को राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर फिट इंडिया मूवमेंट का शुभारंभ किया गया। राष्ट्रीय खेल दिवस प्रसिद्ध हॉकी खिवाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

फिट इंडिया मूवमेंट का उद्देश्य लोगों में फिटनेस एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पैदा करना है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में मोटापा, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप से ग्रसित लोगों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है जो कि लोगों की जीवन शैली में हुए बदलाव का नतीजा है। दैनिक जीवन में कुछ मामूली बदलाव से व्यक्ति फिट रह सकता है, जैसे - योग, नियमित व्यायाम, खानपान में संतुलित आहार, खेल, साइकिल का उपयोग, लिफ्ट या एस्केलेटर के स्थान पर सीढ़ियों का उपयोग आदि। डिजिटल साधनों के उपयोग के साथ साथ शारीरिक गतिविधियों पर भी ध्यान देने से व्यक्ति फिट रह सकता है।

हम सभी को फिटनेस के प्रति जागरुकता फैलाने में सक्रिय जिम्मेदारी निभाते हुए अपनी जीवनशैली में बदलाव करने की आवश्यकता है जिससे स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं में कमी आ सके एवं एक फिट व स्वस्थ भारत का निर्माण हो सके।

"काम इतना करो की हमेशा व्यस्त रहो,
पैसा इतना कमाओ कि मस्त रहो,
और व्यायाम इतना करो कि हमेशा स्वस्थ रहो"

हम और हमारे बच्चे

राजीव रंजन शर्मा
अवर श्रेणी लिपिक

हमारा जीवन हमारे क्रमिक विकास के साथ-साथ कई चरणों में गुजरता है। इन्हीं चरणों से गुजरते हुए हम एक दिन बच्चे के माता-पिता बन जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे अभी-अभी तो अपना बचपन बीता है लेकिन इस बदलाव के साथ ही हमारे अंदर एक अभिभावक का जन्म होता है जो अपने बच्चे की देखभाल और पालन-पोषण के विषय में गंभीर होता है।

समय के साथ-साथ हमारे जीवन और समाज में कई बदलाव आए हैं। आजकल बच्चों के पालन-पोषण और विकास के तौर-तरीकों में भी कई बदलाव आए हैं। आज बच्चों के पालन-पोषण के पारंपरिक तरीकों के अलावा कई अन्य विषयों पर ध्यान देना आवश्यक हो गया है।

1. पारिवारिक वातावरण : बच्चों का मन बहुत कोमल होता है। इस पर पड़ी छाप आसानी से नहीं जाती है। समय के साथ-साथ धुंधली अवश्य होती है। जिन घरों में अधिकांश तौर पर झगड़े या तनाव का माहौल रहता है। उस वातावरण में पले बच्चे डरे-सहमें से व्यवहार करते हैं। भविष्य में यह मानसिकता हिंसक या असामाजिक रुप में भी बदल सकती है। सकारात्मक और खुशनुमा माहौल से बच्चों का मानसिक विकास सुदृढ तरीके से होता है।

2. बच्चे के व्यवहार को अधिक से अधिक समझना : अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को एक तय ढांचे के अंतर्गत पालना चाहते हैं। वे अपने सपने अपने बच्चे पर आरोपित करने की कोशिश करते हैं और इस प्रक्रिया में बच्चों पर अनावश्यक दबाव बनाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि हमने जो सपने देखे हैं, वही सपने बच्चे के भी हों। अच्छा यह है कि उनके व्यवहार और रुचियों को अधिक से अधिक समझा जाये और उनकी रुचि की दिशा में उनको अधिक से अधिक प्रेरित किया जाए।

3. अपना समय देना : आजकल का जीवन भागदौड़ की जिंदगी है। इसमें अभिभावकों के पास समय की कमी होती है। वे पालन-पोषण के नाम पर सुविधाएं तो देते हैं परन्तु अपना समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे में बच्चे की मानसिकता का रुख क्या है, इससे माता-पिता अनभिज्ञ रह जाते हैं। कभी-कभी ये लापरवाही दुष्परिणम लेकर भी आ जाती है। अभिभावकों को आवश्यक रुप से बच्चों के साथ पर्याप्त मात्रा में समय देना चाहिए ताकि बच्चे उनसे हर बात बेहिचक कह सकें एवं पूछ सकें।

4. सुविधाओं की मात्रा और समय का निर्धारण : आजकल माता-पिता के लिए बड़ा आसान है कि बच्चे जो चाहें, जब चाहें उन्हें सुविधाएं उपलब्ध करवा दी जाएँ। असमय और असीमित सुविधाएं बच्चों को उन सुविधाओं का आदी, आलसी और लती बना देता हैं। बाद में इन सुविधाओं के बिना जीना उनके लिए असंभव हो जाता है। कभी-कभी सुविधाओं की अनियंत्रित लालसा उन्हें गलत मार्ग पर भी ले जाती हैं। आजकल माता-पिता अधिक से अधिक सुविधाएं देने को अपने सामाजिक रुतबे से जोड़ बैठते हैं। ऐसे में वे बच्चों को असमय (समय से पहले) सुविधाएं दे बैठते हैं। किशोर बच्चों को स्कूटी या मोटर साइकल दे देते हैं। किशोर बच्चे जिम्मेदारी और सावधानी से उपर जोश और रोमांच को रखते हैं। ऐसे में दुर्घटना को न्यौता दे बैठते हैं। बच्चों को सुविधा देने और नियंत्रित और संयमित मात्रा में सुविधा देने में मात्र धागे भर का महीन अंतर है लेकिन इसके दुष्परिणाम भयावह होते हैं। अभिभावकों को इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है और सीमित मात्रा में और समय से सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। ताकि बच्चे उनका मूल्य समझ सकें।

5. इंटरनेट की दुनिया से परिचय कराना : आज की दुनिया में हमारे जीवन में इंटरनेट की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। यह हमारे जीवन को सरल और मनोरंजक बनाता है। आजकल के बच्चे भी इससे अछूते नहीं है और भलि-भांति इसका उपयोग करने लगे हैं। ऐसे में वे सोशल मीडिया में कदम रखते हैं और उनकी एक अलग आभासी (वर्चुअल) दुनिया बन जाती है। हम यह समझ नहीं पाते हैं कि वे उस दुनिया में किस तरह की मानसिकता के लोगों के साथ हैं और क्या सीख रहे हैं। बच्चों का कोमल मन बहुत जल्दी ही किसी पर विश्वास कर लेता है और किन्हीं अन्य सलाहों और संगतियों में अपने जीवन को ढालना शुरु कर देता है। माता-पिता बिना इसकी तह में गए उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। ये बात किशोरों को नागवार गुज़रती है। ऐसे में वे इस युग में बच्चों को इंटरनेट और सोशल मीडिया से बिल्कुल अलग नहीं रख सकते परन्तु उनके प्रयोग की सीमा और प्रकृति पर ध्यान रख सकते हैं। उनसे मित्रवत् व्यवहार कर सोशल मीडिया के बारे में बताते रहें ताकि कुछ उलझन हो तो वे नि:संकोच आपसे कुछ भी पूछ सकें और हमको भी उनकी गतिविधियों के बारे में जानकारी रहे। इस बारे में अभिभावकों को यह सावधानी बरतनी चाहिए कि उनका इस विषय में जानकारी रखने की प्रक्रिया बच्चों को ताक-झांक या जासूसी न लगे। ऐसे में वे बताने के बजाय तथ्यों तो छिपाने लगेंगे।

6. सामाजिक होने पर जोर देना : शहरों की एकल जीवन पद्धति ने बच्चों को अकेला कर दिया है। पहले संयुक्त-परिवार में कई चचेरे-ममेरे भाई-बहन होते थे। आज बच्चे अकेले हो गए हैं। शहरों में अपने तक ही सीमित रहने की प्रवृत्ति के कारण भी बच्चों का सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। सामाजिक व्यवहारों के प्रति अनजान या अकुशल रह जाते हैं, जो उनके आत्मविश्वास में कमी बनकर सामने आती है और व्यक्तित्व में भी झलकती है। आवश्यक है कि बच्चों को आस-पास के बच्चों के साथ घुलने-मिलने दिया जाए। एक साथ खेलकर, समय बिताकर उनका शारीरिक और मानसिक विकास अच्छी तरह से होगा। लोगों से मिलने की हिचक खत्म होगी। मानसिक-परेशानियों और उलझन के समय सामाजिक व्यवहार के प्रति कुशल होंगे। मित्रता, भरोसा, सहयोग, परोपकार, करुणा जैसे मानवीय गुण बच्चे किताबों के बजाय अपने हम उम्र के साथ रहकर बेहतर तरीके से विकसित कर सकते हैं।

7. यौन जानकारियों से अवगत कराना : बच्चों के किशोरावस्था में पहुंचते ही उनके शारीरिक बदलाव उन्हें यौन जानकारियों की ओर आकर्षित करते हैं। ऐसे में वे साथियों से या इंटरनेट से गलत और भ्रामक जानकारियों ले लेते हैं। यौन विषयों के प्रति ये भ्रामक जानकारियाँ इस विषय में अज्ञानता से भी अधिक खतरनाक होती हैं। उसके दुष्परिणाम विभिन्न आयु वर्ग और परिस्थितियों में दिखते हैं। बदलते समय के साथ माता-पिता को इस विषय में चर्चा न करने के मिथक को तोड़ना होगा, संकोच को त्यागना होगा। किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे बच्चों को इन विषय में विज्ञान के स्तर से स्वस्थ जानकारियां उपलब्ध करानी होंगी। इस विषय में झिझक टूटने से बच्चों का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और इस विषय में कुछ पूछने की हिम्मत कर सकेंगे। बच्चों को यौन अपराधों के विषय में अवगत कराना होगा जिससे अपने साथ होने वाले इस प्रकार के व्यवहार को समय रहते चिन्हित कर सकें और इससे स्वयं को बचा सकें।

8. सम्प्रेषण कला पर ध्यान देना : किसी व्यक्ति में अपनी बात संप्रेषित करने की क्षमता का बीज आमतौर पर बचपन में ही पड़ जाता है। बाद के विकास में ये कम या अधिक हो सकता है लेकिन इसे पैदा नहीं किया जा सकता। इसके लिए बच्चों को उनकी बात कहने का पर्याप्त मौका दिया जाना चाहिए। उनकी दिनचर्या को सुना जाना चाहिए, उनकी छोटी-छोटी कहानियों को सुना जाना चाहिए। अधिकांश पिता बच्चों की बातों को सुनते हुए अखबार या मोबाइल में गुम हो जाते हैं। माताएं अपने काम में व्यस्त हो जाती हैं, ध्यान नहीं देती हैं। बच्चे ऐसे व्यवहार से नीरस हो जाते हैं और फिर कुछ भी सुनाने से कतराते हैं। ये कमी बाद में उनके सम्प्रेषण के व्यवहार

में दिखाई देती है। अभिभावकों को इस विषय पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। सम्प्रेषण कला विकसित करने के लिए बच्चों से हमेशा उचित सवाल किए जाने चाहिए। जैसे, किसी संगीत को सुनते हुए ये पूछने के बजाय कि "ये पसंद आया या नहीं ?" ये पूछा जाना चाहिए कि "संगीत के बारे में क्या विचार है।" इससे बच्चे हाँ या ना के बजाय अपनी पसंद और उसके आधार के बारे में बातें कर सकेंगे। बच्चों को अपनी बात कहने या लिखने का अवसर उनकी सम्प्रेषण कला को विकसित करता है।

9. आत्मनिर्भर बनने की ओर प्रोत्साहित करना : कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की हर बात में मदद करने लगते हैं। जैसे-होमवर्क में सहायता या गाइड करने के बजाय स्वयं होमवर्क करने लगना, किताब-कॉपियों का रख-रखाव, बच्चों के बीच वाद-विवाद में दखल देने लगना इत्यादि। इससे बच्चों के अंदर आत्मनिर्भरता विकसित नहीं हो पाती और स्वयं के प्रति लापरवाह होने की आदत विकसित होती हैं। आत्मनिर्भरता का अभाव आगे जाकर आत्मविश्वास की कमी और छोटी-मोटी परेशानियों के क्षणों में ही परेशान हो जाने के रुप में सामने आती है। ये व्यक्तित्व की एक कमी है। मैंने अपने साथियों में से एक के प्रतियोगी परीक्षा के लिए यात्रा करने के पहले उनके माता-पिता को पेंसिल और अन्य सामग्री खरीदते हुए देखा है। यात्रा के लिए बहुत चिंतित देखा है। मेरे उस मित्र में आत्मविश्वास की घोर कमी थी। यह उनके माता-पिता द्वारा उनकी अति देखभाल और आत्मनिर्भर न होने देने से उपजा था। बच्चों को समय के साथ उनके काम स्वयं करने के आदत डालनी चाहिए। इससे वे आत्मनिर्भर होते हैं और आत्मविश्वास की कमी नहीं हो पाती है। परेशानियों के दौर में संघर्ष करने का जज्बा उभरकर सामने आता है। यह आगे जाकर व्यक्तित्व में साफ झलकता है। आधुनिक समय में माता-पिता/अभिभावकों को बच्चों के पालन-पोषण और विकास को उचित और संतुलित रखने के लिए आवश्यक तत्वों पर ध्यान देना चाहिए। जिससे उनकी सोच का आधार बौद्धिक और तार्किक हो। विश्वास और अंधविश्वास के अन्तर को समझाया जाए। प्रेम, मित्रता, सहयोग, करुणा इत्यादि गुणों से अपने व्यक्तित्व को सिंचित कर सकें। बच्चों का उचित पालन-पोषण और विकास ही माता-पिता/अभिभावकों की असली परीक्षा होती है और उनका व्यक्तित्व माता-पिता की जीवनभर की कमाई।

चिंता से मुक्ति

क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद की उपलब्धियां

क्रम संख्या Sr. No.	विवरण / PARTICULARS	वर्ष / Year 2016-17	वर्ष / Year 2017-18	वर्ष / Year 2018-19
1	केंद्रों की संख्या / No. of Centers	27	27	27
2	शाखा कार्यालयों की संख्या / No. of Branch Offices	22	22	22
3	बीमाकृत व्यक्तियों की संख्या / No. of Insured Persons	709730	804230	827800
4	बीमाकृत कर्मचारियों की संख्या / No. of Employees	652420	727490	738650
5	नियोक्ताओं की संख्या / No. of Employers	23908	28749	31359
6	राजस्व आय (करोड़ में) / वसूली / Revenue Income of Region incl. Recovery (in Crores of Rs.)	343.21	501.06	544.02
7	राजस्व वसूली (करोड़ में) / Amount of Revenue Recovery (in Crores of Rs.)	5	7.08	9.68
8	नकद हितलाभ पर व्यय (करोड़ में) / Expenditure on Cash Benefits (in Crores of Rs.)	28.7	31.51	34.57
9	चिकित्सा हितलाभ पर व्यय (करोड़ में) / Expenditure on Medical Benefits (in Crores of Rs.)	182.68	136.88	208.93

गुजरात क्षेत्र की स्थिति

1. क्षेत्रीय कार्यालय की संख्या - 01
2. उप क्षेत्रीय कार्यालय की संख्या - 02
3. आदर्श अस्पताल की संख्या - 01
4. क.रा.बी. अस्पताल की संख्या - 03
5. शाखा कार्यालय की संख्या - 33
6. चिकित्सालय सह शाखा कार्यालय - 01

क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद में वर्ष 2019-2020 में हिंदी प्रगति की रिपोर्ट

क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद में वर्ष 2019-2020 के दौरान राजभाषा नीति का कार्यान्वयन क्षेत्रीय निदेशक के मार्गदर्शन में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय में भारत सरकार, राजभाषा विभाग एवं मुख्यालय, नई दिल्ली के दिशा निदेशानुसार राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य सुनिश्चित किया जाता है। क्षेत्रीय कार्यालय में अवस्थित राजभाषा शाखा के सभी कार्मिकों की कर्मठता, प्रतिबद्धता तथा सभी कार्मिकों के सहयोग से कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिला। क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी प्रयोग संबंधी वार्षिक रिपोर्ट निम्न प्रकार है:-

1. क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देने तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में इसके प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक कार्यक्रम वर्ष (2019-2020) जारी किया गया।
2. कर्मचारियों को हिंदी में काम करने का व्यवहारिक प्रशिक्षण देने के लिए 04 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 80 कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाया गया।
3. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों द्वारा अपना संपूर्ण कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत व्यक्तिश: आदेश जारी किए गए।
4. क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी कार्य की प्रगति की समीक्षा के लिए क्षेत्रीय निदेशक की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चारों तिमाही बैठकें यथा समय आयोजित की गई एवं उनके कार्यवृत्त जारी किए गए।
5. निगम के कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के लिए एवं पठन हेतु हिंदी पुस्तकों की खरीद की गई।
6. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अधीन संचालित हिंदी शिक्षण योजना में टंकण प्रशिक्षण हेतु 04 एवं भाषा प्रशिक्षण हेतु 04 कर्मचारियों को नामित किया गया।
7. क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों में राजभाषा नीति के अनुपालन की स्थिति का जायजा लेने एवं कठिनाईयों का समाधान करने के लिए शाखा कार्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालय की शाखाओं का निरीक्षण किया गया।
8. क्षेत्रीय कार्यालय की सभी शाखाओं एवं शाखा कार्यालयों से प्राप्त मासिक प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की गई।
9. मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय एवं नराकास को भेजी जाने वाली सभी मासिक,

तिमाही, छमाही एवं वार्षिक प्रगति रिपोर्ट यथा समय भेजी गई।

10. राजभाषा कार्यान्वयन के लिए स्थापित जाँच बिन्दुओं की सूची अनुपालन हेतु जारी की गई एवं जाँच बिन्दुओं पर निगरानी रखी गई।
11. महानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में 30-31 अगस्त-2019 को इंदौर में आयोजित 30 वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभागिता की गई।
12. मूल हिंदी टिप्पण-आलेखन पुरस्कार योजना के अधीन 10 कर्मचारियों को एवं हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कुल 41 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।
13. क्षेत्रीय कार्यालय में 01 से 15 सितम्बर 2019 तक राजभाषा पखवाडा का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी की 04 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त हिंदी दिवस का आयोजन भी किया गया।
14. नराकास राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारी ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
15. गृह पत्रिका “अक्षर यात्रा” के 21 वें अंक का प्रकाशन किया गया।
16. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दोनों बैठकों में इस कार्यालय की ओर से प्रतिभागिता की गई। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद द्वारा इस कार्यालय को समय समय पर राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कार प्रदान किए जाते रहे हैं।
17. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अधीन जारी किए गए सभी दस्तावेज का हिंदी अनुवाद उपलब्ध करवाया गया।
18. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सौजन्य से आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए इस कार्यालय के कर्मचारियों को नामित किया गया।
19. हिंदी दिवस समारोह दि.14-09-2019 के अवसर पर राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु रोकड़ शाखा को राजभाषा चलशील्ड प्रदान की गई।
20. क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद में माह सितंबर 2019 के दौरान आयोजित हिंदी की 4 प्रतियोगिताओं में कुल 76 कार्मिकों ने भाग लिया।

चिंता से मुक्ति

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

नियोजक अंशदान अब 4.75% के स्थान पर 3.25% व कर्मचारी अंशदान 1.75% से घटकर 0.75% हुआ।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत देय हितलाभ

क्रम	हितलाभ	हितलाभ व उनकी अंशदायी शर्तें	अवधि तथा हितलाभों की दरें
1	(क) बीमारी हितलाभ	संबंधित अंशदान अवधि में कम से कम 78 दिनों का अंशदान अदा किया हो।	लगातार दो हितलाभ अवधियों में 91 दिनों तक औसत दैनिक मजदूरी का 70 प्रतिशत।
	(ख) वर्धित बीमारी हितलाभ	संबंधित अंशदान अवधि में कम से कम 78 दिनों का अंशदान अदा किया हो।	पुरुष नसबंदी हेतु बीमाकृत व्यक्ति के लिए 7 दिन तथा महिला नसबंदी के लिए बीमाकृत महिला के लिए 14 दिन चिकित्सा प्रमाण पत्र के आधार पर बढ़ाया जा सकता है। भुगतान की हितलाभ दर - औसत मजदूरी का 100 प्रतिशत
	(ग) विस्तारित बीमारी हितलाभ	34 निर्दिष्ट दीर्घकालीन बीमारियों के लिए 2 वर्ष की अवधि का लगातार रोजगार तथा 4 लगातार अंशदान अवधियों में 156 दिन का अंशदान तथा कम से कम 1 अवधि में 78 दिन का अंशदान।	124/309 दिनों तक वर्णित दीर्घकालीन रोग होने की स्थिति में जिसे चिकित्सकीय सलाह पर दो वर्ष (730 दिन) तक बढ़ाया जा सकता है। हितलाभ दर - औसत दैनिक मजदूरी का लगभग 80 प्रतिशत
2	नि:शकतता हितलाभ (क) अस्थायी अपंगता हितलाभ	बीमा योग्य रोजगार में प्रवेश के पहले दिन से, भले ही अंशदान अदा न भी किया हो।	नि:शक्तता (दुर्घटना के दिन छोड़कर) तीन दिन से कम समय में ठीक हो जाने पर, हितलाभ देय नहीं है। अन्यथा अस्थायी अपंगता समाप्त होने तक की पूर्ण अवधि के लिए देय। हितलाभ दर - औसत दैनिक मजदूरी का लगभग 90 प्रतिशत
	(ख) स्थायी अपंगता हितलाभ	बीमा योग्य रोजगार में प्रवेश के पहले दिन से, भले ही अंशदान अदा न भी किया हो।	जीवन पर्यंत दर - कामगार की अर्जन क्षमता की चिकित्सा बोर्ड द्वारा निर्धारित अर्जन क्षमता की हानि के समानुपात। औसत दैनिक मजदूरी का लगभग 90 प्रतिशत। एकमुश्त परिवर्तनीय - यदि दैनिक हितलाभ दर रुपये 10/- तक अथवा परिवर्तित राशि रुपये 60,000/- से अधिक नहीं।
3	आश्रित जन हितलाभ	रोजगार चोट के कारण मृत्यु होने पर बीमा योग्य नियोजन में प्रवेश की तारीख से, भले ही कोई अंशदान अदा न किया हो।	बीमित की पत्नी को जीवन पर्यंत या पुनर्विवाह तक तथा प्रत्येक वैध या दत्तक पुत्र को 25 वर्ष की आयु तक एवं प्रत्येक वैध या दत्तक अविवाहित पुत्री को उसका विवाह होने तक। अशक्त वच्चे को अशक्तता बने रहने तक। आश्रित माता पिता को जीवन पर्यंत। हितलाभ दर-औसत दैनिक मजदूरी का लगभग 90 प्रतिशत जो कि निर्धारित अनुपात में विभक्त किया जाएगा। न्यूनतम पेंशन रुपये 1200/- प्रतिमाह
4	आश्रितजन हितलाभ प्राप्त करने पर महिला (पत्नी) की चिकित्सा देखरेख	आश्रितजन हितलाभ प्राप्त करने वाली विधवा महिला को।	वार्षिक आधार पर आश्रित जन हितलाभ प्राप्त करने पर दिवंगत बीमाकृत व्यक्ति की पत्नी को रुपये 120/- के वार्षिक भुगतान पर क.रा.बी. चिकित्सा योजना में प्राथमिक एवं द्वितीयक देखरेख (अतिविशिष्टता उपचार को छोड़कर)
5	प्रसूति हितलाभ	दो लगातार पूर्ववर्ती अंशदान अवधियों में 70 दिनों के लिए अंशदान की अदायगी	प्रथम दो प्रसवों के लिए 26 सप्ताह, तीसरे जीवित बच्चे और आगे के लिए 12 सप्ताह। गर्भपात के लिए 6 सप्ताह, कमिशनिंग माता के लिए 12 सप्ताह तथा दत्तक माता के लिए 12 सप्ताह हितलाभ दर-औसत दैनिक मजदूरी का 100 प्रतिशत

6	प्रसूति व्यय	जहां क.रा.बी. योजना के अंतर्गत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है, वहाँ बीमाकृत महिला अथवा बीमाकृत व्यक्ति की पत्नी के संबंध में प्रसूति व्यय का भुगतान किया जाएगा।	दो प्रसूतियों तक। हितलाभ दर - रुपये 5000/- प्रति प्रसव
7	चिकित्सा हितलाभ	बीमाकृत व्यक्ति तथा उसके परिवार के सदस्यों को चिकित्सा देखरेख की पूरी सुविधाएं बीमा योग्य नियोजन में प्रवेश की तारीख से ही है।	बीमारी या अपंगता होने तक पूर्ण चिकित्सा देखरेख विशेषज्ञ मामले में खर्च की कोई अधिकतम सीमा नहीं है। सेवानिवृत्त बीमाकृत व्यक्ति जो अधिवर्षिता की आयु पूरी करने से पहले कम से कम 5 वर्ष के लिए बीमा योग्य नियोजन में रहा हो तथा अपंग बीमाकृत व्यक्ति स्वयं तथा अपनी पत्नी के लिए केवल 120 रुपये वार्षिक अंशदान देने पर चिकित्सा देखरेख का हकदार है।
8	(अ) राजीव गांधी श्रमिक कल्याण बेरोजगारी भत्ता योजना (ब) अटल बीमित कल्याण योजना (दिनांक 01-07-2018 से लागू)	प्रत्येक अंशदान अवधि में प्रदत्त/देय 78 दिनों के अंशदान के साथ अंतिम दो वर्षों के लिए बीमा योग्य रोजगार कारखाने/स्थापना के बंद होने, छंटनी या 40 प्रतिशत से अधिक गैर रोजगार चोट के कारण हुई स्थायी नि:शक्तता की अनैच्छिक बेरोजगारी।	बीमारी या अपंगता होने तक पूर्ण चिकित्सा देखरेख विशेषज्ञ मामले में खर्च की कोई अधिकतम सीमा नहीं है। सेवानिवृत्त बीमाकृत व्यक्ति जो अधिवर्षिता की आयु पूरी करने से पहले कम से कम 5 वर्ष के लिए बीमा योग्य नियोजन में रहा हो तथा अपंग बीमाकृत व्यक्ति स्वयं तथा अपनी पत्नी के लिए केवल 120 रुपये वार्षिक अंशदान देने पर चिकित्सा देखरेख का हकदार है।
9	अंत्येष्टि व्यय	बीमा योग्य रोजगार में प्रवेश की तारीख से।	बीमाकृत व्यक्ति की अंत्येष्टि पर हुआ रुपये 15,000/- तक का व्यय
10	नियम 60 के अंतर्गत व्यवसायिक पुनर्वास भत्ता	आयु 45 से अधिक न हो तथा रोजगार चोट की वजह से न्यूनतम 40 प्रतिशत नि:शक्तता रखता हो।	व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र/संस्थान के प्रतिमानों के अनुरुप सरकारी संस्थान या सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान में किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण। सामान्य दरों पर वाहन खर्च केंद्र द्वारा प्रमाणित व्यय या रुपये 123/- प्रतिदिन, जो भी अधिक हो।
11	नि:शक्त व्यक्तियों के नियोजन के लिए नियोक्ताओं की प्रोत्साहन योजना	निजी क्षेत्र में कार्यरत विकलांग व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने के लिए मजदूरी की वेतन सीमा रुपये 25,000/- तक। नियोक्ता अंशदान का भुगतान केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है।	
12	बीमित के आश्रितों को ईएसआइ मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की सुविधा	कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशनानुसार	

नियोजक अपने संस्थान का पंजीकरण करने हेतु www.esic.nic.in देखें

प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना (पी.एम.-एस.वाय.एम.) गैर संगठित क्षेत्र के श्रमिकों हेतु पेंशन योजना दिनांक 15-02-2019 से लागू जानकारी के लिए क्षे.का./उप क्षेत्रीय कार्यालय/निकटतम शा.का. में हेल्प डेस्क से संपर्क किया जा सकता है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गुजरात क्षेत्र एक नजर 31-03-2019

1. योजना में शामिल नियोजक :	55,137	6. औषधालय :	103
2. योजना में कर्मचारियों की संख्या :	14,43,800	7. चिकित्सालय :	11
3. योजना में बीमितों की संख्या :	16,27,460	8. शाखा कार्यालय :	33
4. योजना में लाभार्थियों की संख्या :	63,14,545	9. औषधालय सह शाखा कार्यालय :	01
5. व्याप्त केन्द्रों की संख्या :	19 जिल्लो में	10. एम.आई.एम.पी. :	02
		11. अति विशेषज्ञ उपचार हेतु अनुबंधित अस्पताल :	57

चिंता से मुक्ति

सौरभ वालिया
कार्यालय अधीक्षक

हिंदी हैं हम

हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है,
हिंदी एक अहसास है ।

हिंद से हिंदी है और हिंदी से हिंद है ।
यूं तो ये एक वाक्य है,
मगर समझ सकें तो ये जज़्बात है,
हिंदी एक अहसास है ।

हमारी मिट्टी की खुश्बू है हिंदी,
जोड़ती है तोड़ने वालों को हिंदी,
फिर इसे अपनाना क्यो लगे एक पाप है,
हिंदी एक अहसास है ।

ना हिंदू, ना मुस्लमान, ना सिख, ना ईसाई,
हिंदी तो एक सैनिक है,
और मानो तो अपने आप में
सेना भी अखंड भारत की आवाज है,
हिंदी एक अहसास है ।

हिंदी मेरा आगाज़ थी,
हिंदी मेरा अभिमान है,
हिन्दुस्तान हूँ मैं, हिंदी मेरी दास्तान है,
गणतंत्र का साज़ है,
हिंदी एक अहसास है ।

ना राम की, ना रहमान की,
हिंदी तो है आवाम की हिंदी है हम,
वतन है हिन्दुस्तान हमारा,
जरुर ये किसी सच्चे भारतीय की अरदास है,
(आरती भी यही है, यही नमाज है)
हिंदी एक अहसास है ।

सफरनामा

हिम्मत ज़िंदा रख,
खुदा ना खासता कभी हौसला कम पड़ जाए,
तो चंद अरमान ज़िंदा रख, तालाश ज़िंदा रख,
पथ में जो कभी रोशनी की कमी खले,
तो भी तू चलता रह, और उसका फरमान ज़िंदा रख ।

हस्ती ज़िंदा रख
फिर चाहे मुश्किलें हों अनेक अपार,
तू हँस, टूट रहा हो अंदर, मगर हँस,
अपनों की खुशी ज़िंदा रख,
उम्र का तकाजा तो सब देंगे तुझे,
तुझे तेरे बचपन का वास्ता,
अपनी मासूमियत ज़िंदा रख ।

कश्ती ज़िंदा रख
किनारे तो बदलते रहेंगे,
साहिल का भरोसा न कर,
तू एक तूफान है अपने आप में,
वो उफान ज़िंदा रख ।

उम्मीद ज़िंदा रख,
तकदीर का लिखा भी बदलते देखा हैं मैंने,
तू बस अपने जीने में जिंदगी ज़िंदा रख,
पलभर का मुसाफिर है, सफर ज़िंदा रख,
सफरनामा ज़िंदा रख ।

चिंता से मुक्ति

आपके पत्र

माननीय महोदय,

आपके कार्यालय "कर्मचारी राज्य बीमा निगम" से प्रकाशित गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" के 21 वें अंक की प्राप्ति 21 वीं शताब्दी के दूसरे चरण में हुई। मुख पृष्ठ पर "एकता की मूर्ति" प्रस्तुत कर आपने पत्रिका के विहंगम दृश्य को दृश्यमान बना, उसे गौरवान्वित किया है।

राजभाषा हिंदी संबंधी विशेष अवतरणों को प्रकाशित कर हिंदी को जन-जन की भाषा होने का महत्व दिया गया। क्षेत्रीय निदेशक, सहायक निदेशक, महानिदेशक तथा वित्त-बीमा-चिकित्सा आयुक्तों ने अपनी-अपनी प्रखर प्रवाही भाषा में हिंदी की अभिव्यक्ति को सराहा है। श्री प्रजापत से लेकर श्री गुणावत तक के सभी लेख और काव्य स्तरीय, पठनीय और संग्रहणीय हैं। अत: गुजरात के एसिक परिवार में निहित हिंदी के प्रति लगाव की भावना को साधुवाद।

अक्षर यात्रा की यह ज्ञानवर्धक यात्रा निरन्तर चलती रहे, इसी शुभकामना के साथ।

(डॉ. मालती दुबे)
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

महोदय,

आपके अ.शा.पत्र सं.37.ए.49.4.2011 दिनांक 19 फरवरी 2019 द्वारा भेजी गई पत्रिका की प्रति हमें प्राप्त हुई। पत्रिका के 21वें अंक के लिए बधाई।

पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री विविधमुखी व रोचक है। नेकी जिंदा रहती है तथा दोषी कौन (भूपेन्द्र कुमार), एकता की मूर्ति (स्टैचु ऑफ यूनिटि) (श्री राजीव रंजन शर्मा) हाई ब्लड प्रेशर या उच्च रक्तचाप (श्रीमती रचना अग्रवाल) श्रीमती प्रेरणा के. कोठारी द्वारा लिखित लेख "अंकुरित आहार एवं हमारा स्वास्थ्य" आदि रचनाएं काफी सराहनीय, शिक्षाप्रद व पठनीय है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ काफी लुभावना है। अधिकतर लेख एक-दूसरे से बढकर हैं। प्रकाशन से जुड़े सभी सज्जनों को अभिनंदन। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

आजाद सिंह
उप निदेशक (राजभाषा) प्रभारी, उप क्षेत्रीय कार्यालय बमसांद्रा

महोदय,

आपके कार्यालय के अ.शा.पत्र सं.37.ए.49.4.2011- रा.भा. दिनांक 19-02-2019 के साथ आपकी गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" का 21वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। अक्षरों की इतनीं लंबी यात्रा सराहनीय है और अनुकरणीय भी। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है, विशेष रुप से उजले पृष्ठों पर बैंगनी रंग के अक्षरों की छपाई बहुत सुंदर बन पड़ी है। फ़ोटोज के प्रिंट भी बहुत अच्छे हैं। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की भव्य मूर्ति-स्टैचु ऑफ यूनिटि देखकर और श्री राजीव रंजन शर्मा जी के द्वारा इस मूर्ति के संबंध में दी गई जानकारी से मन प्रफुल्लित हो गया। पत्रिका के संरक्षक व क्षेत्रीय निदेशक महोदय की कलम से निकले उद्गार बहुत ही सकारात्मक एवं प्रेरणादायक हैं। गुजरात में हिंदी साहित्य के प्रवर्तक के रुप में डॉ. (श्रीमती) सुधा श्रीवास्तव जी का परिचय पाकर अच्छा लगा। कार्यस्थल पर हमारे कर्तव्यों के संबंध में श्री कमल राम प्रजापत जी के टिप्स बहुत उपयोगी हैं। श्री भूपेन्द्र कुमार जी का दृष्टान्त-नेकी जिन्दा रहती है - अति उत्तम है। श्रीमती प्रेरणा के. कोठारी जी की सैन फांससिस्को यात्रा से रोचक जानकारी के साथ साथ वहां के नागरिकों के उत्तम चरित्र, ईमानदारी, निष्कपटता, अनुशासनप्रियता और कार्य के प्रति समर्पण की भावना के संबंध में जानकारी आश्चर्य-मिश्रित सुखद अनुभूति हुई। श्री निखिल तोमर ने बहुत सुंदर ढंग से शिक्षा के वास्तविक सरोकार को उजागर किया है। श्री बी.एस.मीना जी ने हिंदी की विकास-यात्रा-एक अच्छी बात से प्रारंभ की है कि हमारी जन शक्ति देश की भी और हिन्दी की भी शक्ति है। जनशक्ति को कर्म-शक्ति में परिवर्तित कर दिया जाए तो देश और भाषा का भी उद्धार अपने-आप हो जाएगा। हर्बल उपचार के दोहे रोचक हैं। श्री भूपेन्द्र कुमार जी ने अपनी मार्मिक कहानी-दोषी कौन-में सही कहा है कि राजनीतिक लाभ के लिए जाति, धर्म और क्षेत्र का दुरुपयोग किया जाता है। हाई ब्लडप्रेशर की रोग-थाम के लिए श्रीमती रचना अग्रवाल जी के टिप्स बहुत ही कारगर हैं। श्री उमाशंकर मिश्र जी ने वार्तालाप के माध्यम से अच्छी सीख दी है। अन्य लेख कविताएँ आदि भी पठनीय वं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका से जुडे सभी हिंदी-सेवियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(दिनेश सिंह)
सहायक निदेशक राजभाषा क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना

आपके पत्र

महोदय,

कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद, गुजरात से प्रकाशित विभागीय हिंदी पत्रिका "अक्षर यात्रा" 21वें अंक की प्रति सप्रेम प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय हैं। कार्यस्थल एवं व्यवहार, नेकी जिंदा रहती है, वास्तविक शिक्षा, हिंदी की विकास यात्रा, हर्बल उपचार, पत्राचार के विभिन्न रुप विशेष सराहनीय हैं। विशषकर "स्टेच्यु ऑफ यूनिटि" आवरण पृष्ठ चित्र आकर्षण का केन्द्र है।

पत्रिका के सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाईयां एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

(रेवती रमेश)
सहायक निदेशक (राजभाषा) क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 21वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" को अद्योपांत पढ़ा गया। क्षेत्रीय धरोहर को दर्शाता पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन अच्छा लगा। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। रचनाओं में "कार्यस्थल एवं व्यवहार" एकता की मूर्ति (स्टैच्यु ऑफ यूनिटि), "मेरी सैन फ्रांसिस्को यात्रा" ताडपत्र लेखन से श्रुत लेखन तक "दोषी कौन" व अंकुरित आहार एवं हमारा स्वास्थ्य आदि रचनाएं विशेष रुप से ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न गतिविधियों के सुन्दर छायाचित्रों से सुसज्जित पत्रिका का यह अंक बहुत ही सटीक एवं पठनीय है। आशा है पत्रिका यात्रा जारी रहेगी।

गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" के सफल प्रकाशन के लिए आपको तथा पत्रिका प्रकाशन समीति से जुडे सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुनील तनेजा)
क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका अक्षर यात्रा का 21वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्रदर्शित 'स्टैच्यु ऑफ युनिटि' का चित्र सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानियाँ, कविताएँ एवं अन्य रचनाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी में उनकी व्यापक अभिरुचि दर्शाती हैं। 'कार्यस्थल एवं व्यवहार' 'एकता की मूर्ति' (स्टैच्यु ऑफ युनिटि) 'नेकी जिंदा रहती है' 'वास्तविक शिक्षा' जैसी रचनाएं बहुत ही प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

(रत्नेश कुमार गौतम)
निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्रांक 37.ए.49.4.2011- रा.भा. दिनांक 23-04-2019 के द्वारा गृह पत्रिका अक्षर यात्रा का 21वां अंक वर्ष 2018-2019 प्राप्त हुआ।

पुस्तक के सफल प्रकाशन में संरक्षक की कलम से महानिदेशक का संदेश, अति सराहनीय कदम है। इस अंक के लेख, कविताएँ, कहानी अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। आपकी पत्रिका के 'गुजरात में हिंदी साहित्य' 'नेकी जिंदा है' 'वास्तविक शिक्षा' 'हिंदी की विकास यात्रा क्या है अक्षर यात्रा' 'बेटी कविताएँ' छायाचित्र आदि रचनाएँ विशेषरुप से पठनीय हैं। आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

(धीरेन्द्र कुमार)
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा) उप क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे

चिंता से मुक्ति

आपके पत्र

महोदय,

आपके कार्यालय की विभागीय पत्रिका 'अक्षर यात्रा' के 21 वें अंक की प्राप्त हुई। आभार। सर्वप्रथम 'ख' क्षेत्र में गृह पत्रिका प्रकाशक की इस अनवरत यात्रा को बनाए रखने हेतु हार्दिक बधाई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है तथा इसका मुखपृष्ठ गुजरात क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। रचनाओं में वैविध्य हैं जो कार्यालय के हिन्दीमय माहौल का परिचायक है। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ।

(प्रमोद कुमार निराला)
सहायक निदेशक (रा.भा.) क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

प्रिय अक्षय काला जी,

आपके दिनांक 19-02-2019 के अ.शा.पत्र 37.ए.49.4.2011- पत्रिका प्रकाशन राजभाषा के साथ प्रेषित अक्षर यात्रा का 21वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका समृद्ध विषय-वस्तु और सादगीपूर्ण प्रस्तुति के साथ प्रकाशित की गई है। 'पत्राचार के विभिन्न रुप' और "राजभाषा नियम-1976" शीर्षक लेख कार्यालयी कामकाज और राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से कर्मचारियों के लिए बहुत उपयोगी है। संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई देने के साथ पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

(संजय कुमार सिन्हा)
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, महाराष्ट्र

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अक्षर यात्रा" के 21वे अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें।

पत्रिका के 21वें अंक के सफल प्रकाशन सहित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समति अहमदाबाद से राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्राप्त पुरस्कारों हेतु। श्री कमल राम प्रजापत जी को भी नराकास सम्मान के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका में श्री कमल राम प्रजापत, श्री निखिल तोमर, श्री उमाशंकर मिश्र, श्री पार्थिव आद्रेजा, श्रीमती रचना अग्रवाल, श्री सुनिल कुमार गौतम एवं श्री महेन्द्रपाल मीणा जी की रचनाएं। पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं इसमें संकलित विभिन्न आयोजनों के चित्र। विशेष श्री भूपेन्द्र कुमार का अनूदित आलेख एवं श्री बी. एस. मीना जी का सूचनाप्रद आलेख। संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाईयाँ। अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित।

(मनोज कुमार यादव)
सहायक निदेशक, (प्रभारी राजभाषा अधिकारी) उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

आदरणीय श्री अक्षय काला जी,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "अक्षर यात्रा" के 21 वे अंक के सफल प्रकाशन पर ढेरों बधाई। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद। कार्यालयीन हिंदी साहित्य के गागर में सागर भरती आपकी यह पत्रिका यह पत्रिका अपने बेहतर अंकों के लिए सदा ही याद रखी जायगी। इस पत्रिका के नियमित मदों के अतिरिक्त "कार्यालय स्थल एवं व्यवहार" "नेकी जिन्दा रहती है" काफी रोचक रचनाएं हैं। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

सादर।

(जानकी सिंह)
उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

(प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त-गुजरात कार्यालय, अहमदाबाद)

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के तत्त्वावधान में राजभाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद कार्यालय द्वारा 03 दिसंबर, 2019 को आयोजित "हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" में क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद कार्यालय की सुश्री उन्नति अग्रवाल ने **प्रथम** पुरस्कार प्राप्त किया।

पुरस्कृत अधिकारी/कर्मचारी से यह अपेक्षा है कि वे अपने सरकारी कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग कर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते रहेंगे।

(अजय दास मेहरोत्रा)

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त-गुजरात, अहमदाबाद

स्थान : अहमदाबाद
दिनांक : 24.01.2020

आईपी
वीआईपी

ईएसआईसी
चिंता से मुक्ति

ईएसआई योजना के हितलाभ

चिकित्सा देखभाल के अलावा, हम पूर्ण सामाजिक सुरक्षा भी सुनिश्चित करते हैं।

ईएसआई योजना के अधीन हितलाभ

चिकित्सा हितलाभ

हम आपकी सभी चिकित्सा जरूरतों का ध्यान रखते हैं।

ईएसआईसी बीमा योग्य रोजगार में शामिल होने की तिथि से स्वयं एवं आश्रितजन के लिए उचित चिकित्सा देखरेख प्रदान करता है।

बीमारी हितलाभ

बीमारी के कारण अवकाश का मतलब आर्य अर्जन समाप्त होना नहीं है।

ईएसआईसी दो निरंतर हितलाभ अवधियों में 91 दिनों तक चिकित्सा छुट्टी के दौरान औसत दैनिक वेतन का 70 प्रतिशत नकद भुगतान करता है।

मातृत्व हितलाभ

हमारे हितलाभों के साथ आपके नवजात शिशु का स्वागत है।

ईएसआईसी मातृत्व छुट्टी के दौरान प्रसूति में 26 सप्ताह तक एवं गर्भपात के मामले में 6 सप्ताह तक तथा कमीशनिंग माँ तथा दत्तक माँ को 12 सप्ताह तक औसत दैनिक वेतन का 100 प्रतिशत नकद भुगतान करता है।

नि:शक्तता हितलाभ

निःशक्तता का मतलब आय अर्जन से अक्षमता नहीं है।

ईएसआईसी अस्थायी निःशक्तता के मामले में चोट ठीक होने तक और स्थायी निःशक्तता के मामले में जीवन भर निरंतर मासिक पेंशन का भुगतान करता है।

आश्रितजन हितलाभ

जो आप पर निर्भर हैं वह हम पर भी निर्भर हैं।

ईएसआईसी रोजगार के दौरान चोट के कारण मृत्यु के मामले में आश्रितजनों के बीच नियत अनुपात में मासिक पेंशन का भुगतान करता है।

बेरोजगारी भत्ता

रोजगार छूटने का मतलब आय की हानि नहीं है।

ईएसआईसी रोजगार की अनैच्छिक हानि या गैर–रोजगार चोट के कारण स्थायी अशक्तता के मामले में अधिकतम 24 माह की अवधि के लिए मासिक नकद भत्ता प्रदान करता है।

वृद्धावस्था चिकित्सा देखभाल

वृद्धावस्था के बाद भी स्वस्थ जीवन का आनंद उठाएं।

ईएसआईसी अपने ईएसआई अस्पतालों तथा औषधालयों में सेवानिवृत्त/सेवा पूरी कर चुके बीमाकृत व्यक्तियों के लिए चिकित्सा हितलाभ प्रदान करता है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

निःशक्तता का मतलब सम्पूर्ण कौशल की हानि नहीं है।

ईएसआईसी, रोजगार के दौरान चोट लगने से हुई निःशक्तता के मामले में वसूला गया वास्तविक शुल्क या ₹123/– प्रतिदिन के हिसाब से भुगतान करता है।

शारीरिक पुनर्वास

रोजगार के दौरान चोट लगने का अर्थ दैनिक आजीविका की हानि नहीं।

रोजगार के दौरान चोट लगने के कारण शारीरिक निःशक्तता के मामले में बीमाकृत व्यक्ति जब तक कृत्रिम अंग केन्द्र में भर्ती रहता है, उसे अस्थायी निःशक्तता हितलाभ की दर से भुगतान किया जाता है।

अन्य हितलाभ

प्रसूति व्ययः

जहां ईएसआई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है, वहां ईएसआईसी दो मामलों तक ₹5000/– प्रति मामले की दर से भुगतान करता है।

अंत्येष्टि व्यय

ईएसआईसी मृतक बीमाकृत व्यक्ति की अंत्येष्टि के लिए मूल व्यय या अधिकतम ₹15,000/– का नकद भुगतान करता है।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment
Government of India
Website: www.labour.gov.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
Website: www.esic.nic.in, www.esic.in, www.esichospitals.gov.in

Call Toll Free Number: 1800-11-2526, Medical Helpline No.: 1800-11-3839